सांध्य दैनिक
नई दृष्टिबिंदु
सच की शक्ति, जनता की दृष्टि
PRGI Reg No - CTHIN/25/A3746

सु-विचार

" ऐसा व्यक्तित्व बनाओं उपस्थिति का पता न चले
परंतु अनुपस्थिति का एहसास अवश्य हो ...!!

अज्ञात...

वर्ष–01 अंक–203 | संपादक आलोक तिवारी | दुर्ग, मंगलवार 11 अगस्त 2026 | पृष्ठ 08 | मूल्य –2

रायपुर में महिला से दुष्कर्म : शराब पिलाकर अलग–अलग जगह ले गए 4 युवक, 3 गिरफ्तार, 1 नाबालिग

पीड़िता बिलासपुर की, स्कूल परिसर में भी दुष्कर्म का आरोप, डीडी नगर पुलिस कर रही जांच

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

राजधानी रायपुर में एक महिला से दुष्कर्म का मामला सामने आया है। बिलासपुर के चकरभाठा क्षेत्र की रहने वाली पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने तीन युवकों को गिरफ्तार कर लिया है। घटना में एक नाबालिग के शामिल होने की जानकारी मिलने पर उसके खिलाफ भी किशोर न्याय कानून के तहत कार्रवाई की जा रही है। फिलहाल डीडी नगर थाना पुलिस मामले की जांच कर रही है।

शराब पिलाकर ले गए अलग-अलग जगह

पीड़िता ने पुलिस को दिए बयान में बताया कि कुछ युवकों ने पहले उसे शराब पिलाई। इसके बाद उसे सरोना क्षेत्र से अलग-अलग स्थानों पर ले जाया गया। महिला ने आरोप लगाया है कि आरोपियों ने उसके साथ स्कूल परिसर में भी दुष्कर्म किया। घटना के बाद पीड़िता ने आजाद चौक थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई।

जीरो FIR से शुरू हुई कार्रवाई

महिला की शिकायत पर आजाद चौक थाना पुलिस ने जीरो पर FIR दर्ज की। प्रारंभिक जांच में घटनास्थल डीडी नगर थाना क्षेत्र के अंतर्गत पाया गया। इसके बाद पूरे मामले को आगे की कार्रवाई के लिए डीडी नगर पुलिस को सौंप दिया गया।

3 आरोपी हिरासत में, नाबालिग पर भी कार्रवाई

डीडी नगर पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए मामले में शामिल शिवा, आयुष और दुर्गा नाम के तीन युवकों को गिरफ्तार कर लिया है। वहीं घटना में एक नाबालिग की भूमिका सामने आने पर उसके खिलाफ किशोर न्याय कानून के तहत नियमानुसार कार्रवाई की जा रही है। पुलिस अब पीड़िता के बयान, मेडिकल रिपोर्ट और घटनास्थल से जुड़े तथ्यों के आधार पर जांच कर रही है। आरोपों की पुष्टि के लिए अन्य साक्ष्य भी जुटाए जा रहे हैं।

"आरोपियों से पूछताछ जारी" - थाना प्रभारी

आजाद चौक थाना प्रभारी राजेश सिंह ने बताया कि महिला की शिकायत पर मामला दर्ज किया गया था। डीडी नगर पुलिस ने आरोपियों को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। जांच पूरी होने के बाद आगे की कानूनी कार्रवाई की जाएगी। पुलिस ने कहा है कि मामले की हर एंगल से जांच की जा रही है और दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

कारीगर बनकर 60 ग्राम सोना चोरी करने वाला आरोपी जोधपुर से गिरफ्तार

कारीगर बनकर दुकान में काम करने के दौरान 60 ग्राम कच्चा सोना चोरी कर फरार हुए एक अंतर्राज्यीय आरोपी को रायपुर पुलिस ने जोधपुर, राजस्थान से गिरफ्तार किया है। आरोपी मूलत : पश्चिम बंगाल का निवासी है। यह कार्रवाई पुलिस उपायुक्त क्राइम एवं साइबर स्मृतिक राजनाला और पुलिस उपायुक्त मध्य क्षेत्र तारकेश्वर पटेल के निर्देशन में एण्टी क्राइम एण्ड साइबर यूनिट और थाना गोलबाजार पुलिस की संयुक्त टीम ने की। नयापारा शंकर चौक निवासी नंदकिशोर सोनी ने गोलबाजार थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि उनकी एल.जी. डाई कटिंग की दुकान में आभूषण बनाने के लिए राजू नामक कारीगर को काम पर रखा गया था। 11 जनवरी 2026 को प्रार्थी ने राजू को 60 ग्राम कच्चा सोना, कीमत करीब 7 लाख 80 हजार रुपये, आभूषण बनाने के लिए दिया था। राजू ने सोना दुकान की आलमारी में रखा था। इसके बाद राजू अचानक काम पर नहीं आया और उसके निवास पर भी नहीं मिला। 15 जनवरी को जब आलमारी चेक की गई तो सोना गायब मिला। प्रार्थी की शिकायत पर थाना गोलबाजार में अपराध क्रमांक 16/26 धारा 306 बीएनएस के तहत प्रकरण दर्ज किया गया था। लंबित प्रकरणों की समीक्षा के दौरान पुलिस अधिकारियों ने संपत्ति संबंधी मामलों को प्राथमिकता से निकाल करने के निर्देश दिए थे।

मुख्यमंत्री ने पदोन्नत पुलिसकर्मियों को लगाए बैज, नई भर्ती के नियुक्ति पत्र सौंपे

एमपी पुलिस देश की सबसे अच्छी फोर्स, सरकार आपके परिवार के लिए सब करेगी : डॉ. मोहन यादव

नई दृष्टिबिंदु / भोपाल

मध्यप्रदेश पुलिस में रिकॉर्ड पदोन्नति और नई भर्ती के बाद रविवार को भोपाल के रवींद्र भवन में 'आभार प्रदर्शन समारोह' आयोजित किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने नवीन चयनित पुलिसकर्मियों को नियुक्ति पत्र सौंपे और पदोन्नत अधिकारियों-कर्मचारियों को बैज लगाकर सम्मानित किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मध्यप्रदेश पुलिस की खाकी वर्दी साढ़े आठ करोड़ जनता के विश्वास का प्रतीक है। वर्दी पहनकर आदमी शेर बन जाता है। एमपी पुलिस देशभक्ति, जनसेवा और साहस के बलबूते देशभर में अपनी विशेष पहचान बना रही है। चंबल से दस्यु समस्या खत्म की और मध्यप्रदेश को देश का सबसे पहला नक्सलमुक्त राज्य बनाया। उन्होंने पुलिसकर्मियों को भरोसा दिलाया कि पुलिस अपनी ड्यूटी निभाए, सरकार आपके परिवार के लिए अपने दायित्वों का निर्वहन करेगी।

अहम घोषणाएं : समारोह में मुख्यमंत्री ने कई बड़ी घोषणाएं कीं: खंडवा जिले में नई पुलिस बटालियन स्थापित की जाएगी। राज्य औद्योगिक सुरक्षा बल के रूप में 3 नई बटालियन बनेंगी। नई बटालियनों में अति पिछड़ी जातियों, बैगा, भारिया और सहरिया वर्ग की विशेष कंपनियां शामिल होंगी।

58 संवर्गों में 27,534 को पदोन्नति : डॉ. यादव ने कहा कि सरकार ने पुलिस विभाग के 58 संवर्गों में 27,534 अधिकारी-कर्मचारियों को पदोन्नति का लाभ दिया है। 30 रक्षित निरीक्षकों को डीएसपी बनाया गया है। उन्होंने कहा कि इस प्रक्रिया में लगभग 20 हजार पुलिसकर्मी सेवानिवृत्त हो गए, इसका मलाल है।

पुलिस महानिदेशक कैलाश मकवाना ने बताया कि 2025 में 7500 नए पदों पर भर्ती की मंजूरी मिली। इस वर्ष 9662 विभिन्न पदों पर भर्ती की स्वीकृति मिली है। हॉक फोर्स में 325 और विशेष सहयोगी दस्ते में 882 पदों पर भर्ती हुई है। इन्हीं प्रयासों से एमपी नक्सलवाद से मुक्त हुआ।

पारदर्शी भर्ती, सिंहस्थ की तैयारी : मुख्यमंत्री ने कहा कि 2023 से अब तक 14,704 अभ्यर्थियों का चयन हो चुका है। 2026 में 9,751 पदों पर भर्ती की मंजूरी है। अगले 2 साल में आरक्षक और सब इंस्पेक्टर के शेष पद भी भरे जाएंगे। पुलिस बैंड और एफएसएल की भर्ती अंतिम दौर में है। डीजीपी ने कहा कि सिंहस्थ 2028 एक मेगा इवेंट है। पिछले 2 साल में 18 हजार से अधिक नई नियुक्तियां हुई हैं। नया प्रशिक्षित बल सिंहस्थ ड्यूटी के लिए उपलब्ध होगा।

पुलिसकर्मियों ने जताया आभार : पदोन्नत डीएसपी दीपिका शिंदे ने कहा कि मुख्यमंत्री के निर्णय से हमारी सेवा को सम्मान मिला। निरीक्षक रीना चौहान ने कहा कि पदोन्नति से परिवार में तीन लोगों को लाभ मिला। प्रशिक्षु डीएसपी विनय डहरवाल और महिला आरक्षक आस्था शर्मा ने भी अपने अनुभव साझा किए।

कार्यक्रम में एसीएस गृह संजय शुक्ला, स्पेशल डीजी पंकज श्रीवास्तव, आईजी हरिनारायणचारी मिश्र सहित बड़ी संख्या में अधिकारी-कर्मचारी मौजूद थे।

सीजी जीएसटी का शिकंजा : गुटखा किंग गुरमुख पर 317 करोड़ का टैक्स–पेनल्टी

90 दिन में जमा करने का आदेश, 12 संपत्तियां चिन्हित, भुगतान नहीं करने पर होगी कुर्की

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग-भिलाई

राज्य जीएसटी विभाग ने दुर्ग के चर्चित गुटखा कारोबारी गुरमुख जुमनानी पर करीब 317 करोड़ रुपए की टैक्स और पेनल्टी का शिकंजा कस दिया है। विभाग ने आदेश की तारीख से 90 दिन के भीतर पूरी राशि जमा करने के निर्देश दिए हैं। समय पर भुगतान नहीं होने पर जुमनानी की 12 चिन्हित संपत्तियों को कुर्क कर बकाया वसूला जाएगा।

जीएसटी विभाग की 5 साल की जांच में सामने आया कि सितार नाम से तंबाकूयुक्त गुटखे का कारोबार सुनियोजित नेटवर्क के जरिए चलाया जा रहा था। वर्ष 2021 से 2025 तक के कारोबार के आधार पर यह राशि निर्धारित की गई है।

कैसे चलता था नेटवर्क

विभागीय जांच के अनुसार कारोबार की पूरी चेन दुर्ग, राजनांदगांव और रायपुर तक फैली थी: जोरातराई और गनियारी की फैक्ट्रियां: यहां मुख्य रूप से पैकिंग होती थी। जुलाई 2025 में CGGST ने दोनों जगह छापा मारा था। राजनांदगांव की कोमल फूड फैक्ट्री: सरकारी रिकॉर्ड में मीठी सुपारी निर्माण के लिए पंजीकृत, लेकिन जांच में गुटखे का कच्चा माल तैयार होने के सबूत मिले। उत्पादन का समय: रात 10 बजे से सुबह 7 बजे तक। एक मिनट में करीब 250 पैकेट और एक दिन में लगभग 50 बोरा गुटखा खपाने का दावा जांच में आया है।

किराए के गोदाम

2021 से 2025 के बीच रायपुर, दुर्ग, राजनांदगांव में पिता के नाम से किराए पर लिए गए गोदामों का उपयोग होता था। मजदूरों की व्यवस्था छिंदवाड़ा के श्रम ठेकेदार से होती थी।

कानूनी कार्रवाई और साक्ष्य

अधिकारियों के अनुसार मामले में न्यायालय में चालान पेश हो चुका है। जांच के दौरान 3 कर्मचारियों को सरकारी गवाह बनाया गया है और उनके शपथपत्र लिए गए हैं।

पुलिस और खाद्य विभाग भी पहले कार्रवाई कर चुके हैं। 2023 में मोहन नगर पुलिस ने गुरमुख और रिश्तेदार जगदीश को NDPS एक्ट में गिरफ्तार किया था। गुरमुख अभी जेल में है और सत्र न्यायालय से जमानत याचिका खारिज हो चुकी है। हाईकोर्ट में सुनवाई लंबित है। CGGST की कार्रवाई के बाद खाद्य विभाग द्वारा सील की गई फैक्ट्री का टीन शेड तोड़कर मशीनरी बाहर निकालने का आरोप भी जांच में सामने आया है।

चिन्हित संपत्तियां :

जीएसटी विभाग ने गुरमुख जुमनानी के नाम 12 संपत्तियां चिन्हित की हैं। 90 दिन में 317 करोड़ जमा नहीं करने पर नियमानुसार कुर्की की प्रक्रिया शुरू होगी।

गुटखे पर सरकारी आंकड़े

विश्व स्वास्थ्य संगठन हल्लड और राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के आंकड़ों के मुताबिक भारत में तंबाकू से हर साल 13.5 लाख मौतें होती हैं। छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे NFHS-5 के अनुसार 15 साल से अधिक आयु के 32.8% लोग तंबाकू का सेवन करते हैं। राज्य सरकार ने 2013 से ही तंबाकू युक्त गुटखे के निर्माण, भंडारण और बिक्री पर प्रतिबंध लगाया हुआ है। खाद्य सुरक्षा मानक अधिनियम के तहत प्रतिबंधित गुटखे के कारोबार पर कड़ी सजा का प्रावधान है।

CGGST अधिकारियों का कहना है कि अवैध गुटखा कारोबार से न केवल स्वास्थ्य को नुकसान है बल्कि सरकार को करोड़ों के राजस्व का भी चूना लग रहा था। इसी को देखते हुए यह अब तक की सबसे बड़ी टैक्स-पेनल्टी कार्रवाई मानी जा रही है।

JPSC-JSSC धांधली के विरोध में रांची में छात्रों का बवाल, पुलिस ने किया लाठीचार्ज और वाटर कैनन का इस्तेमाल

नई दृष्टिबिंदु / रांची

झारखंड लोक सेवा आयोग और झारखंड कर्मचारी चयन आयोग की परीक्षाओं में कथित धांधली और अनियमितताओं के विरोध में छात्रों का आंदोलन सोमवार को उग्र हो गया। 17 दिनों से जयपाल सिंह मुंडा स्टेडियम में चल रहे प्रदर्शन के बाद सैकड़ों छात्र विधानसभा का घेराव करने सड़कों पर उतर आए। पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच तीखी झड़प हुई।

सुरक्षा के मद्देनजर पुलिस ने विधानसभा जाने वाले रास्तों पर 7-लेयर बैरिकेडिंग की थी। आक्रोशित छात्रों ने एक-एक कर 6 बैरिकेड तोड़ दिए और आगे बढ़ गए। भीड़ को रोकने के लिए पुलिस ने वाटर कैनन चलाया। इस दौरान छात्रों ने पानी की बौछार के बीच नारेबाजी करते हुए डांस कर विरोध दर्ज कराया। स्थिति बिगड़ती देख पुलिस को भीड़ खदेड़ने के लिए लाठीचार्ज करना पड़ा।

पिछले 8-9 दिनों से अनशन पर बैठे छात्र नेता देवेंद्र महतो को अन्य छात्र स्ट्रेचर पर उठाकर प्रदर्शन स्थल लाए। उन्होंने छात्रों से शांति बनाए रखने की अपील करते हुए कहा कि आज मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन का जन्मदिन है। हम नहीं चाहते इस मौके पर छात्रों के साथ कोई अनहोनी हो या खून बहे। आंदोलन को हिंसक न बनाएं और अपनी मांगें शांतिपूर्ण तरीके से सरकार तक पहुंचाएं।

छात्रों के बढ़ते दबाव के बीच खदरउ के तीन वरिष्ठ सदस्यों डॉ. अनिमा हंसदा, अजीता भट्टाचार्य और जमाल अहमद ने अपने पदों से इस्तीफा दे दिया है। सरकार का कहना है कि छात्रों के प्रतिनिधिमंडल के साथ अब तक 3 दौर की बातचीत हो चुकी है और अधिकांश मांगों पर सहमति बन गई है। वहीं छात्रों का कहना है कि जब तक उनकी सभी प्रमुख मांगें पूरी नहीं होतीं, आंदोलन जारी रहेगा। दिल्ली के जंतर-मंतर की तर्ज पर रांची में छात्र रचनात्मक तरीके से विरोध कर रहे हैं। प्रदर्शन स्थल पर पोस्टर्स, सोशल मीडिया मीम्स और स्लोगन बोर्ड लोगों का ध्यान खींच रहे हैं।

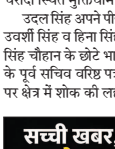

भिलाई चरोदा वार्ड-5 निवासी उदल सिंह चौहान का हृदयाघात से निधन

भिलाई। नगर निगम भिलाई चरोदा वार्ड क्रमांक 5 दादर बस्ती निवासी उदल सिंह चौहान उम्र 59 वर्ष का सोमवार सुबह 8 बजे एम्स हॉस्पिटल में हार्ट अटैक आने से आकस्मिक निधन हो गया। परिवार के अनुसार उनका अंतिम संस्कार मंगलवार 11 अगस्त को शाम 4 बजे दादर चरोदा स्थित मुक्तिधाम में किया गया।

उदल सिंह अपने पीछे धर्म पत्नी रूपलता सिंह, पुत्र प्रीतम सिंह और पुत्रियां उवर्शी सिंह व हिना सिंह सहित भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं। वे घनश्याम सिंह चौहान के छोटे भाई और कुंवर सिंह, संत सिंह, न्यू प्रेस क्लब भिलाई के पूर्व सचिव वरिष्ठ पत्रकार खिलावन सिंह के बड़े भाई थे। उनके निधन पर क्षेत्र में शोक की लहर है।

रायपुर में 20 लाख का MDMA जब्त, राजस्थान का अंतर्राज्यीय तस्कर गिरफ्तार

तेलघानी नाका के पास 106 ग्राम मादक पदार्थ के साथ पकड़ा गया आरोपी, सप्लाई नेटवर्क की जांच जारी

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

रायपुर कमिश्नरेट पुलिस ने सूखे नशे के कारोबार पर बड़ी कार्रवाई करते हुए 20 लाख रुपये कीमत का 106.19 ग्राम MDMA के साथ एक अंतर्राज्यीय तस्कर को गिरफ्तार किया है। आरोपी मूलतः राजस्थान का रहने वाला है।

यह कार्रवाई पुलिस उपायुक्त क्राइम एवं साइबर स्मृतिक राजनाला और पुलिस उपायुक्त मध्य क्षेत्र तारकेश्वर पटेल की सतत मॉनिटरिंग में एण्टी क्राइम एण्ड साइबर यूनिट, एण्टी नारकोटिक्स टास्क फोर्स और थाना गंज पुलिस की संयुक्त टीम ने की।

तेलघानी नाका के पास हुई गिरफ्तारी

09 अगस्त 2026 को एण्टी क्राइम यूनिट को मुखबिर से सूचना मिली कि थाना गंज क्षेत्र के तेलघानी नाका ओवरब्रिज के नीचे

बिजली ऑफिस के पास एक व्यक्ति MDMA रखकर बिक्री की फिराक में है।

सूचना पर वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश पर संयुक्त टीम ने घेराबंदी कर आरोपी को हिरासत में लिया। पूछताछ में उसने अपना नाम रामनिवास माचरा पिता भंवरलाल माचरा, उम्र 22 वर्ष, निवासी ग्राम केरला नाडा बिकमकोर, थाना मतोडा, जिला फलोदी, राजस्थान बताया। तलाशी में आरोपी के बैग से 106.19 ग्राम मादक पदार्थ टञ्टअ और 1 आईफोन बरामद हुआ। जप्त मशरूका की कुल कीमत लगभग 20 लाख रुपये आंकी गई है।

इस साल अब तक 163 आरोपी गिरफ्तार

रायपुर कमिश्नरेट की एण्टी क्राइम एण्ड साइबर यूनिट और एण्टी नारकोटिक्स टास्क फोर्स द्वारा इस वर्ष अब तक टञ्टअ एक्ट के 73 प्रकरणों में कुल 163 आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है। पुलिस ने आरोपियों से 5 करोड़ 47 लाख 4 हजार 290 रुपये कीमत का मादक पदार्थ जब्त किया है। इसमें गांजा 588 .97 किलो, टञ्टअ 173 ग्राम, प्रतिबंधित नशीली टेबलेट 27,875 नग, कोकीन, हेरोइन, अफीम, सिरप, 8 चारपहिया और 11 दोपहिया वाहन सहित 81 मोबाइल फोन शामिल हैं। पुलिस अधिकारियों ने कहा कि शहर में नशे के अवैध कारोबार के खिलाफ अभियान आगे भी इसी तरह जारी रहेगा।

नारकोटिक्स एक्ट में प्रकरण दर्ज

आरोपी वैध दस्तावेज नहीं दिखा सका और पुलिस को गुमराह करने का प्रयास किया। इस पर थाना गंज में अपराध क्रमांक 243/26 धारा 22(ग) नारकोटिक एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार किया गया।

प्रारंभिक पूछताछ में आरोपी ने बताया कि वह अपने साथियों के साथ मिलकर MDMA की बिक्री करता है और सप्लाई के लिए रायपुर आया था। पुलिस अब आरोपी से मादक पदार्थ के स्रोत, सप्लायर, अन्य साथियों और पूरे सप्लाई नेटवर्क के संबंध में पूछताछ कर रही है। प्रकरण में इंड-टू-इंड कार्रवाई जारी है।

"ग्राम ननकट्टी में विश्व आदिवासी दिवस पर विधिक जागरूकता की नई पहल"

जिले के अलग-अलग हिस्सों में पीएलवी बने कानून के साथी, छात्रावास में कानून के साथ करियर की भी बात

नई दृष्टिबिंदु / 00000

किताबों से निकलकर जब कानून गांव की चौपाल, पंचायत भवन और हाट-बाजार तक पहुंचता है, तो वह सिर्फ जानकारी नहीं रहता वह बदलाव की शुरुआत बन जाता है। विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, दुर्ग के अध्यक्ष के. विनोद कुजूर के मार्गदर्शन में सचिव उमेश कुमार भागवतकर ने ग्राम ननकट्टी में पैरा-लीगल वालेंटियर्स के साथ एक ऐसी ही जनजागरूकता पहल की, जिसमें विधिक जागरूकता को पारंपरिक भाषणों तक सीमित रखने के बजाय संवाद और रैली के माध्यम से सीधे लोगों के बीच ले जाया गया।

ग्राम ननकट्टी के पंचायत भवन से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। यहां ग्रामीणों को आदिवासी समुदायों के अधिकारों, विधिक संरक्षण, निःशुल्क विधिक सहायता और जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सेवाओं की जानकारी दी गई। इसके बाद तस्वीर बदली। पंचायत भवन से निकली जागरूकता रैली गांव के हाट-बाजार और विभिन्न हिस्सों से होकर गुजरी। कम्यूनिटी मीडियेटर्स, ढछश, ग्रामीणों और जनप्रतिनिधियों की सहभागिता से यह रैली केवल एक कार्यक्रम नहीं रही, बल्कि गांव के बीच चलती-फिरती विधिक जागरूकता मुहिम बन गई। रैली के दौरान लोगों को यह संदेश दिया गया कि अपने अधिकार जानिए, जरूरत पड़ने पर कानूनी मदद लीजिए और विवादों को बढ़ाने के बजाय बातचीत से समाधान तलाशिए। कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा सामुदायिक मध्यस्थता। ग्रामीणों को बताया गया कि हर विवाद का रास्ता अदालत से होकर ही गुजरे, यह जरूरी नहीं। कई छोटे विवाद ऐसे होते हैं जिन्हें समय रहते संवाद, समझ, सहमति और सहयोग से सुलझाया जा सकता है।

विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर GOVT. POST MATRIC S.C. BOYS HOSTEL में भी जिला विधिक सेवा प्राधिकरण दुर्ग की ओर से LADCS के दो काउंसलर पहुंचे। यहां विद्यार्थियों से केवल कानून की बातें नहीं हुई उनके सपनों की भी बात हुई। विद्यार्थियों को विश्व आदिवासी दिवस के महत्व, आदिवासी समुदायों की

संस्कृति, परंपराओं और अधिकारों के साथ-साथ यातायात सुरक्षा, साइबर फ्रॉड और डिजिटल सुरक्षा के बारे में जागरूक किया गया।

विद्यार्थियों को विशेष रूप से सचेत किया गया कि OTP साझा न करें, अनजान लिंक पर क्लिक न करें और बैंक संबंधी गोपनीय जानकारी किसी के साथ साझा न करें। इसके साथ ही विद्यार्थियों से उनके कैरियर, लक्ष्य और भविष्य की योजनाओं पर संवाद किया गया तथा उन्हें मेहनत, अनुशासन और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया गया। विश्व आदिवासी दिवस पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, दुर्ग के पैरा-लीगल वालेंटियर्स ने जिले के विभिन्न स्थानों पर विधिक जागरूकता शिविर आयोजित किए। निःशुल्क विधिक सहायता, लोक अदालत, मध्यस्थता और अन्य विधिक सेवाओं की जानकारी लोगों तक पहुंचाई गई तथा उन्हें बताया गया कि कानूनी समस्या आने के बाद अकेले उसका सामना करना जरूरी नहीं है, विधिक सेवा प्राधिकरण मदद के लिए उपलब्ध है। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, दुर्ग का यह प्रयास विधिक जागरूकता को केवल सूचना देने की प्रक्रिया से आगे ले जाकर उसे जनभागीदारी, संवाद और सामुदायिक समाधान से जोड़ने की दिशा में एक कदम रहा। गांव की गलियों से हाट-बाजार तक पहुंची यह पहल यही बताती है - कानून की असली ताकत सिर्फ उसे लागू करने में नहीं, बल्कि उसे हर व्यक्ति तक पहुंचाने में है।

खास खबर

समाज का काम जोड़ना है : पुरानिक

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

रामनगर भिलाई स्थित देवांगन सामाजिक भवन में रविवार को दुर्ग जिला देवांगन समाज की कायर्कारिणी की बैठक रखी गई। बैठक को संबोधित करते हुए दुर्ग जिला देवांगन समाज के अध्यक्ष पुरानिक राम देवांगन ने कहा समाज का काम जोड़ना है, समाज के समस्याओं का हल आपस में बातचीत कर निकला जा सकता है। उन्होंने सामाजिक जनों से आह्वान किया कि रिश्तों में एवं समाज में संवादहीनता नहीं रहनी चाहिए।

कार्यक्रम के आरम्भ में उपस्थित सामाजिक जनों ने माँ परमेश्वरी की पूजा अचर्ना कर जयघोष किया तथा सावन मास में भगवान भोले बाबा से समाज कल्याण की मंगलकामना की गई। भिलाई रामनगर में संपन्न इस बैठक में समाज में महिलाओं एवं युवाओं को भागीदारी बढ़ाने के लिए महिला प्रकोष्ठ और युवा प्रकोष्ठ का मनोनयन किया गया। महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष श्रीमती कीर्ति देवांगन, सचिव श्रीमती खिलेश्वरी देवांगन, कोषाध्यक्ष श्रीमती नेकप्रभा देवांगन तथा युवा प्रकोष्ठ का अध्यक्ष आशीष देवांगन, सचिव तुलसी देवांगन, कोषाध्यक्ष राजकुमार देवांगन को मनोनीत किया गया। जिला संगठन का विस्तार करते हुए प्रेमचन्द देवांगन नेहरूनगर भिलाई को प्रमुख संरक्षक, दिलीप देवांगन जामगांव को कायर्कारी अध्यक्ष न्याय एवं अनुशासन समिति, राकेश देवांगन केलाबाड़ी दुर्ग को कायर्कारी अध्यक्ष विविध सामाजिक कार्य, मीडिया प्रभारी खुमान सिंह देवांगन, संरक्षक गण में भूषण लाल देवांगन दुर्ग, धनुकलाल देवांगन धमधा, पुनाराम देवांगन पुरई, भेदूराम देवांगन कैम्प 2, सोहन लाल देवांगन मैत्रीकुंज, बृजभूषण प्रसाद देवांगन, पूनम चंद देवांगन, सलाहकार मंडल में सोहन लाल देवांगन कैम्प 2, चैतराम देवांगन पुरई, ओमप्रकाश, तोपसिंह, गणेशराम, लोमश देवांगन, गौरीशंकर, रमेश देवांगन कुम्हारी एवम् अंकेक्षक द्वय अशोक देवांगन हुडको, प्रहलाद देवांगन शंकर नगर दुर्ग सहित सभी प्रकोष्ठों के सलाहकार एवं कायर्कारिणी का मनोनयन किया गया। इस बैठक में वित्तीय वर्ष के प्रथम तिमाही का आय व्यय का ब्यौरा सचिव राजेंद्र लिमजे द्वारा प्रस्तुत किया गया। महिला प्रकोष्ठ द्वारा जिला स्तरीय तीज मिलन के प्रस्ताव पर सहमति व्यक्त करते हुए पूरे जिले के महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित कर कार्यक्रम की भव्यता से मनाने पर महिला अध्यक्ष कीर्ति देवांगन ने जोर दिया। नगरीय निकायों के आगामी चुनाव में समाज की प्रतिनिधित्व एवं भागीदारी की संभावनाओं पर सामाजिक चिंतन किया गया।

इस बैठक में सभी मनोनीत सदस्यों को गुलाल का टीका लगाकर एवं अंग वस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया गया, तत्पश्चात समाजसेवी एवं प्रधान संरक्षक प्रेमचन्द देवांगन द्वारा शपथ ग्रहण करवाया गया। इस बैठक में सर्वश्री पुरानिक राम देवांगन, राजेन्द्र लिमजे, धीरेन्द्र, मुकेश, वासुदेव, पोषण, श्रीमती पिंकी, यादराम, गोकुल, द्वारिका देवांगन, डॉ के. एल. देवांगन, कृपाराम, गेंदलाल हरिप्रसाद, राजेश, पुरुषोत्तम, यामिनी, खुमेश्वरी, कीर्ति, शकुन, तारा, सुमित्रा, सुनीता, दीप्ति, प्रतिभा, दीपा, रिंकी, कुन्ती, करुणा, सरिता, खिलेश्वरी, अम्बेश्वरी, डोमन लाल, मोहन, युगलकिशोर, विजय, सहित सभी ब्लॉक एवं मंडल अध्यक्ष और सचिव की उपस्थिति रही।

17 अगस्त को उरला में होगा कांवर यात्रा, जलाभिषेक एवं महाप्रसादी का आयोजन

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

श्रावण मास के पावन अवसर पर श्री सिद्धेश्वर उद्धव संस्थान, राम नगर, उरला एवं जय मां उरलेश्वरी दुगीत्सव समिति, आजाद चौक उरला सहित वार्ड क्रमांक 57-58 के नागरिकों के सहयोग से कांवर यात्रा, जलाभिषेक एवं महाप्रसादी का आयोजन किया जा रहा है। धार्मिक आयोजन 17 अगस्त 2026, सोमवार को श्री सिद्धेश्वर धाम मंदिर, उरला रेलवे क्रॉसिंग, वार्ड क्रमांक 57-58, उरला, दुर्ग में होगा। आयोजन के तहत सुबह 7:30 बजे से कांवर यात्रा निकाली जाएगी। यह यात्रा श्री सिद्धेश्वर उद्धव संस्थान, राम नगर, उरला से प्रारंभ होकर शिवनाथ नदी बेलौदी घाट तक जाएगी। कांवर यात्री बेलौदी घाट से पवित्र जल लेकर भगवान शिव का जलाभिषेक करेंगे।

महिलाएं सीख रहीं राजमिस्त्री का हुनर

प्रधानमंत्री आवास योजना सहित ग्रामीण निर्माण कार्यों के लिए तैयार होंगे कुशल राजमिस्त्री,

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

ग्रामीण महिलाओं एवं युवाओं को रोजगार और स्वरोजगार से जोड़ने के उद्देश्य से जनपद पंचायत धमधा की ग्राम पंचायत बिरेभाट में 30 दिवसीय राजमिस्त्री प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। कलेक्टर दुर्ग अभिजीत सिंह के मार्गदर्शन में संचालित यह प्रशिक्षण 27 जुलाई से 25 अगस्त 2026 तक चलेगा। प्रशिक्षण में कुल 35 प्रतिभागी शामिल हैं, जिनमें 33 महिलाएं और 2 पुरुष हैं। प्रशिक्षण के माध्यम से प्रतिभागियों को भवन निर्माण की आधुनिक तकनीकों का सैद्धांतिक और व्यवहारिक ज्ञान दिया जा रहा है, ताकि प्रशिक्षण पूरा करने के बाद वे दक्ष राजमिस्त्री के रूप में स्थानीय स्तर पर रोजगार एवं स्वरोजगार प्राप्त कर सकें।

जिला पंचायत दुर्ग के मुख्य कायर्पालन अधिकारी बजरंग कुमार दुबे ने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को नींव निर्माण, ईंट चिनाई, दीवार निर्माण, छत ढलाई, प्लास्टर, फ्लोरिंग और फिनिशिंग सहित भवन निर्माण की विभिन्न तकनीकों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसके अलावा निर्माण सामग्री के उचित अनुपात एवं उपयोग, गुणवत्ता नियंत्रण तथा कार्यस्थल पर सुरक्षा मानकों की भी जानकारी दी जा रही है।

प्रशिक्षण में आधुनिक निर्माण तकनीकों के साथ व्यावहारिक अभ्यास पर विशेष जोर दिया जा रहा है, जिससे प्रशिक्षणार्थी वास्तविक कार्यस्थल पर मजबूत, सुरक्षित और टिकाऊ भवन निर्माण करने में सक्षम हो सकें।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में मास्टर ट्रेनर श्रीमती हीरा बाई साहू द्वारा प्रतिभागियों को भवन निर्माण से संबंधित तकनीकी एवं व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को निःशुल्क ड्रेस, टूल किट और भोजन की सुविधा भी उपलब्ध कराई जा रही है। इससे प्रशिक्षण में शामिल ग्रामीण महिलाओं और युवाओं को आवश्यक संसाधनों के लिए अतिरिक्त आर्थिक बोझ नहीं उठाना पड़ रहा है।

मुख्य कायर्पालन अधिकारी बजरंग कुमार दुबे ने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) सहित अन्य ग्रामीण निर्माण कार्यों की गुणवत्ता

सुनिश्चित करने में प्रशिक्षित राजमिस्त्रियों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय स्तर पर कुशल राजमिस्त्रियों की उपलब्धता से निर्माण कार्यों की गुणवत्ता के साथ-साथ उनकी गति में भी सुधार आएगा।

उन्होंने कहा कि इस तरह के कौशल विकास कार्यक्रम ग्रामीण महिलाओं और युवाओं को रोजगार एवं स्वरोजगार से जोड़ने के साथ उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। विशेष रूप से महिलाओं की बड़ी संख्या में राजमिस्त्री प्रशिक्षण में भागीदारी महिला सशक्तिकरण की दिशा में सकारात्मक संकेत है। ग्राम पंचायत बिरेभाट के सरपंच ज्ञानदास नारंगे ने कहा कि यह प्रशिक्षण गांव की महिलाओं और युवाओं के लिए रोजगार का नया अवसर लेकर आया है। प्रशिक्षण के बाद प्रतिभागी स्थानीय स्तर पर निर्माण कार्यों में रोजगार प्राप्त कर सकेंगे और अपनी आय का साधन विकसित कर सकेंगे। रोजगार सहायक देवेन्द्र कुमार ध्रुव ने बताया कि प्रशिक्षण नियमित रूप से संचालित किया जा रहा है। प्रतिभागियों को सैद्धांतिक जानकारी के साथ लगातार व्यवहारिक अभ्यास कराया जा रहा है, ताकि प्रशिक्षण पूरा होने के बाद वे विभिन्न निर्माण कार्यों को कुशलतापूर्वक संपादित कर सकें।

हुनरमंद हाथों से रखी जा रही आत्मनिर्भर भविष्य की नींव

बिरेभाट में चल रहा यह प्रशिक्षण कार्यक्रम महिला सशक्तिकरण, कौशल विकास और ग्रामीण रोजगार सृजन की दिशा में महत्वपूर्ण पहल बनकर सामने आया है। प्रशिक्षण में शामिल 33 महिलाएं और 2 पुरुष केवल राजमिस्त्री का हुनर ही नहीं सीख रहे हैं, बल्कि अपने आत्मनिर्भर और बेहतर भविष्य की मजबूत नींव भी तैयार कर रहे हैं।

प्रशिक्षण पूरा होने के बाद इन प्रतिभागियों के हुनरमंद हाथ प्रधानमंत्री आवास योजना सहित अन्य ग्रामीण निर्माण कार्यों में मजबूत और गुणवत्तापूर्ण घरों के निर्माण में योगदान देंगे। साथ ही स्थानीय स्तर पर रोजगार के नए अवसरों के सृजन से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलने की उम्मीद है।

रिसाली कॉलेज में छात्रों को विधायक चंद्राकर का संदेश

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

शासकीय नवीन महाविद्यालय, रिसाली में राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के तहत आयोजित दीक्षारंभ एवं इंडक्शन कार्यक्रम में दुर्ग ग्रामीण विधायक एवं राज्य ग्रामीण एवं अन्य पिछड़ा वर्ग क्षेत्र विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष ललित चंद्राकर मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने नवप्रवेशी छात्र-छात्राओं का तिलक और पुष्प भेंट कर स्वागत किया तथा उन्हें उच्च शिक्षा के नए सफर के लिए शुभकामनाएं दीं। समारोह में विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं, जबकि महाविद्यालय के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को सम्मानित भी किया गया।

अपने संबोधन में विधायक ललित चंद्राकर ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 शिक्षा व्यवस्था में व्यापक बदलाव का माध्यम है। उन्होंने कहा कि यह नीति केवल डिग्री हासिल करने तक सीमित नहीं है, बल्कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल विकास, नवाचार और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण पर विशेष जोर देती है। उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि आज का युवा नौकरी मांगने वाला नहीं, बल्कि नौकरी देने वाला बने। स्टार्टअप शुरू करें, नवाचार करें और अपने कौशल के माध्यम से दूसरों के लिए भी रोजगार के अवसर पैदा करें।

विधायक ने भारतीय शिक्षा परंपरा का उल्लेख करते हुए कहा कि नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय कभी विश्वभर के विद्यार्थियों के लिए ज्ञान के प्रमुख केंद्र थे। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति उसी गौरवशाली परंपरा को आधुनिक स्वरूप में आगे बढ़ाने का प्रयास है। उन्होंने राज्य सरकार की छात्रहित योजनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि नियमित अध्ययन करने वाली पात्र छात्राओं को 30 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि उपलब्ध कराई जा रही है, ताकि आर्थिक कारणों से कोई भी बेटी उच्च शिक्षा से वंचित न रहे।

कार्यक्रम के दौरान एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत विधायक ललित चंद्राकर ने महाविद्यालय परिसर में आम का पौधा रोपित कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया। इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष अनुपम साहू, मंडल महामंत्री नरेंद्र निर्मलकर, जिला मंत्री शैलेन्द्र सेंडे, जनभागीदारी समिति के अध्यक्ष एवं पार्षद विधि यादव, पार्षद सरिता देवांगन, प्राचार्य डॉ. अनुपमा आस्थामा सहित जनप्रतिनिधि, शिक्षकों और छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

जीई फाउंडेशन ने संजीवनी बालिका छात्रावास में किया चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

समाजसेवी संस्थान गोल्डन एम्पथी (जीई) फाउंडेशन ने संजीवनी बालिका छात्रावास में बालिकाओं के लिए चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रतियोगिता का उद्देश्य बालिकाओं की रचनात्मक प्रतिभा, कल्पनाशीलता, आत्मविश्वास एवं सामाजिक जागरूकता को प्रोत्साहित करना था।

इस अवसर पर बालिकाओं को संबोधित करते हुए जीई फाउंडेशन के संयोजक प्रदीप पिल्ले ने अपनी प्रतिभा पर विश्वास रखने, निरंतर सीखने और अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि बच्चों के भीतर छिपी प्रतिभा को पहचानना और उसे आगे बढ़ने का अवसर देना ही ऐसे आयोजनों का मूल उद्देश्य है। इस प्रतियोगिता ने बालिकाओं में उत्साह और आत्मविश्वास

का संचार किया। रंगों और कल्पनाओं के माध्यम से बालिकाओं ने अपनी प्रतिभा को खूबसूरती से अभिव्यक्त किया। प्रतियोगिता को बालिकाओं की कक्षा एवं आयु के अनुसार तीन वर्गों में विभाजित किया गया। प्राथमिक वर्ग की बालिकाओं को अपनी कल्पना एवं रुचि के अनुसार चित्र बनाने की स्वतंत्रता दी गई, जबकि मिडिल स्कूल वर्ग के लिए पर्यावरण संरक्षण तथा हाई स्कूल वर्ग के लिए देशभक्ति विषय निर्धारित किया गया।

प्रत्येक वर्ग से प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली श्रेष्ठ चित्रकृतियों का चयन किया गया तथा विजेता बालिकाओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में विनोद सिन्हा, जिला मिशन समन्वयक, समग्र शिक्षा, सीता अग्रवाल, छात्रावास प्रभारी एवं धनेश्वरी साहू, अधीक्षिका, संजीवनी बालिका छात्रावास की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम में इनरव्हील भिलाई की सचिव रविंदर कौर बाजवा का विशेष सहयोग रहा। उनके सौजन्य से प्रतियोगिता में शामिल बच्चों को उपहार प्रदान किए गए। आयोजन में जी.ई. फाउंडेशन की ओर से ज्योति पिल्लई, शुभागा सुरेश, अनुपमा मेश्राम, मोनिका सिंह, सोनम सागर, प्रकाश देशमुख एवं अजीत सिंह उपस्थित थे।

सरस्वती साइकिल योजना से बेटियों की शिक्षा को मिल रहा बढ़ावा : विधायक चंद्राकर

रिसाली स्वामी आत्मानंद स्कूल में 61 छात्राओं को विधायक ने वितरित की नि :शुल्क साइकिल

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

शासकीय स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट इंग्लिश मीडियम स्कूल रिसाली में सरस्वती निःशुल्क साइकिल वितरण योजना के तहत साइकिल वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में दुर्ग ग्रामीण विधायक एवं राज्य ग्रामीण एवं अन्य पिछड़ा वर्ग क्षेत्र विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष ललित चंद्राकर शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने 61 छात्राओं को निःशुल्क साइकिल वितरित कर उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विधायक ललित चंद्राकर ने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में राज्य सरकार शिक्षा और महिला सशक्तिकरण को प्राथमिकता दे रही है। सरस्वती निःशुल्क साइकिल योजना बेटियों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल है। साइकिल मिलने से छात्राओं को विद्यालय

आने-जाने में सुविधा होगी, उनका समय बचेगा और वे आत्मविश्वास के साथ अपनी पढ़ाई जारी रख सकेंगी।

उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति के तहत आत्मानंद स्कूलों में अंग्रेजी माध्यम की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ विद्यार्थियों को संस्कार भी दिए जा रहे हैं। अब गरीब और मध्यम वर्ग के बच्चे भी बिना किसी भेदभाव के डॉक्टर, इंजीनियर और अधिकारी बनने का सपना पूरा कर सकते हैं। छात्रवृत्ति, पोषण और निःशुल्क पाठ्यपुस्तक जैसी योजनाएं विद्यार्थियों को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

शिक्षा के साथ संस्कार और नशामुक्ति पर दिया जोर

विधायक ने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि सफलता के लिए लगन, अनुशासन और निरंतर मेहनत जरूरी है। उन्होंने कहा कि शिक्षा ही सशक्त, आत्मनिर्भर और विकसित भारत की सबसे मजबूत नींव है। आज की बेटियां आगे चलकर डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक और अधिकारी बनकर देश और प्रदेश का नाम रोशन कर सकती हैं।

उन्होंने विद्यार्थियों को नशे और गलत संगति से दूर रहने की अपील करते हुए कहा कि शिक्षा के साथ अच्छे संस्कार भी जरूरी हैं। युवाओं को नशे से दूर रहकर अपने भविष्य और करियर पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। माता-पिता और गुरुजनों का सम्मान तथा अनुशासित एवं नशामुक्त जीवन सफलता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

कार्यक्रम में उपस्थित जनप्रतिनिधियों ने भी छात्राओं को साइकिल मिलने पर बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

इस अवसर पर महापौर शशि सिन्हा, प्राचार्य श्रीमती पारस सिंह, मंडल अध्यक्ष अनुपम साहू एवं राजू राकेश जंघेल, जिला मंत्री शैलेन्द्र शेंडे, नेता प्रतिपक्ष शैलेन्द्र साहू, पार्षद मनीष यादव एवं सरिता देवांगन, ओबीसी मोर्चा अध्यक्ष एवं विधायक प्रतिनिधि विक्की सोनी, कंचन सिंग, मोंगरा देशमुख, ममता शर्मा, बिंदु साहू, तेजस्वनी सोनवानी, ओमकेश्वरी मार्कंडेय, अजीत चौधरी, मंडल उपाध्यक्ष सचिन गोस्वामी, सतीश दुबे, के.पी. बघेल सहित विद्यालय के समस्त स्टाफ उपस्थित रहे।

सही ड्रेस व कपड़ों का चयन करें तो छोटी हाइट को भी लंबा दिखा सकते हैं

कई लोग अपनी हाइट से नाखुश रहते है, उन्हें लगता है कि वे थोड़े और लंबे होते तो अच्छा होता। लेकिन अगर कम व अवरेज हाइट होने पर भी सही इस व कपड़ों का चयन करें तो छोटी हाइट को भी लंबा दिखा सकते हैं। आइए, हम आपको कपड़ों के चयन से जुड़ी कुछ ऐसी बातें बताते हैं जो छोटी हाइट को लंबा दिखाने में कारगर साबित होंगी -

- ऐसी ड्रेस पहनें जिसमें पैर दिखें तो आप लंबी नजर आएंगी जैसे ऐसी कोई शॉर्ट ड्रेस, जो घुटने तक या उससे ऊपर हो। इस तरह की ड्रेस पहनकर छोटे कद को लंबा दिखाया जा सकता है।
- अगर आपका कद छोटा है तो आप हाई वेस्ट की जींस पहन सकती हैं। इस जींस में आपके पैर लंबे नजर आएंगे जिससे देखने वालों को आपकी लंबाई अधिक होने का एहसास होगा।
- छोटे कद को लंबा दिखाने के लिए ऐसे कपड़ों का चयन करें जो वी नेक के हो, जैसे वी-नेक वाली शर्ट, टी-शर्ट, कुर्ती व ड्रेस आदि। गोल गले के कपड़े पहनने से आपको बचना चाहिए।
- कद को लंबा दिखाने के लिए सर से पैर तक एक ही रंग के कपड़ें पहनें, जैसे टॉप और बॉटम दोनों का एक ही रंग होने पर आपका कद लंबा नजर आएगा। वैसे छोटे कद पर गहरे रंग के कपड़ें भी देखने वालों को लंबा होने का एहसास देते है।
- गाउन पहनकर भी आप लंबी नजर आ सकती हैं।
- कपड़ों के अलावा हाई हील्स पहनकर भी आप हाइट को बढ़ा हुआ दिखा सकती हैं।

शॉपिंग लिस्ट में शामिल करें को-ऑर्ड्स

कम्फर्टेबल आउटफिट्स खरीदना चाहती हैं तो को-ऑर्ड्स ट्राई करें। ये आउटफिट फिट होने के साथ बेहद स्टाइलिश भी है। इसको पहनने के कई फायदे हैं। इन्हें पहनने में झंझट नहीं होता, मौसम के हिसाब से कम्फर्टेबल है वहीं स्टाइल के मामले में भी नंबर वन। इन टू-पीस सेट्स के साथ आपको ज्यादा अक्सेसरीज भी कैरी करने की जरूरत नहीं। अगर आप अभी भी इस फैशन को ट्राई करने में झिझक रहे हैं तो बॉलिवुड सिलेब्स से आइडिया ले सकते हैं।

सावन में मेहंदी और चूड़ियों के बिना क्यों नहीं होता पूरा श्रृंगार?

सावन में मेहंदी और हरा रंग अपनाना सिर्फ एक परंपरा नहीं है, बल्कि यह धर्म और साइंस दोनों के अनुसार सेहत और खुशहाली लाता है। सावन सिर्फ पूजा-पाठ का महीना नहीं है, बल्कि यह मौसम खुद को कुदरत से जोड़ने और जीवन में पॉजिटिव एनर्जी लाने का एक खास मौका भी है। इस मौसम में चारों तरफ हरियाली बिखरी होती है। अधिकतर महिलाएं इस पावन महीने में श्रृंगार करती हैं। क्या आप जानती हैं कि हाथों में रची मेहंदी और हरे रंग की चूड़ी पहनना सिर्फ हमारी परंपरा ही नहीं है, बल्कि इसके पीछे कई धार्मिक, ज्योतिषीय और साइंटिफिक कारण भी छिपे हैं। सावन के दौरान हरा रंग और मेहंदी अपनाना अच्छी सेहत, खुशहाली और सुहाग के लिए बेहद शुभ माना जाता है।

सावन में मेहंदी लगाने और चूड़ियां पहनने के धार्मिक कारण

सावन महीने में भगवान शिव के साथ-साथ माता पार्वती की भी पूजा की जाती है। मंगला गौरी व्रत और हरियाली तीज जैसे मौकों पर मेहंदी लगाना और हरे कपड़े पहनना पति की लंबी उम्र और शादीशुदा जिंदगी में मिठास के लिए बहुत अच्छा माना जाता है। हमारी परंपराओं में महिलाओं को कुदरत का ही एक रूप माना गया है। ऐसे में जब महिलाएं हरे रंग का श्रृंगार करती हैं, तो इससे भगवान शिव, माता पार्वती, विष्णु जी और शनिदेव का आशीर्वाद मिलता है। यह रंग मन में शांति और प्यार भरता है।

सेहत और आयुर्वेद से जुड़ा वैज्ञानिक कारण

सावन का महीना मौसम में बदलाव का समय होता है। बारिश के कारण हवा में नमी बढ़ जाती है, जिससे पसीना, रिकन की समस्याएं और कई तरह के इंफेक्शन होने का खतरा रहता है। मेहंदी में कुदरती एंटी-बैक्टीरियल गुण होते हैं। बदलते मौसम के कारण होने वाले इंफेक्शन या रिकन से जुड़ी परेशानियों से मेहंदी बचाव करती है। आयुर्वेद के मुताबिक मेहंदी की तासीर काफी ठंडी होती है। इसे हाथों और पैरों में लगाने से शरीर की अंदरूनी गर्मी बाहर निकलती है और दिमाग शांत रहता है। यही नहीं मेहंदी में जलन और सूजन को कम करने वाले एंटी इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं, जो पैरों के तलवों को ठंडक और आराम देते है।

सावन का यह श्रृंगार देता है खुशहाली और सकारात्मकता का एहसास

सावल का महीने में महिलाएं हरी चूड़ियां पहनती हैं, मेहंदी लगाती हैं और पारंपरिक श्रृंगार करती हैं। ये छोटी-छोटी चीजें मानसिक स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक असर डाल सकती हैं। मनपसंद कपड़े पहनना, मेहंदी लगाना या सजना-संवरना व्यक्ति को खुश महसूस करा सकता है। खुद की देखभाल करने वाली एक्टिविटी से मूड बेहतर होता है और आत्मविश्वास बढ़ता है।

- मेहंदी लगाना और हरी चूड़ियां पहनना कई महिलाओं के लिए खुशी से जुड़ा अनुभव होता है। इससे तनाव कम होता है और मन शांत रहता है।
- सावन के दौरान होने वाले त्योहार, गीत, पूजा और श्रृंगार की परंपराएं लोगों को परिवार और समाज से जोड़ती हैं।
- अपनों के साथ समय बिताना और खुशियां शेयर करना मानसिक स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद हो सकता है।
- हरा रंग प्रकृति, शांति और ताजगी से जुड़ा माना जाता है। प्रकृति के करीब रहना और पसंदीदा रंगों का इस्तेमाल करना मन को सकारात्मक महसूस कराता है।
- सावन का श्रृंगार केवल बाहरी सुंदरता बढ़ाने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह कई लोगों के लिए खुशी, खुद की देखभाल और इमोशनल जुड़ाव का जरिया भी बन सकता है।

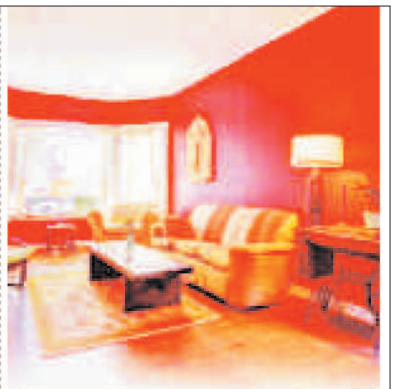

सकारात्मक या नकारात्मक ऊर्जा का संकेत हैं फ्लोरिंग कलर

वास्तुशास्त्र के मुताबिक घर की दीवारों का रंग चुनने से कई वास्तु दोष दूर होते है। ठीक इसी प्रकार फ्लोरिंग कलर भी सोच-समझकर चुने क्योंकि यह सकारात्मक या नकारात्मक ऊर्जा का संकेत हैं।

कहते है कि रंगों का हमारी जिंदगी में गहरा प्रभाव पड़ता है। बात अगर वास्तुशास्त्र की करें तो इसके मुताबिक घर की दीवारों का रंग चुनने से कई वास्तु दोष दूर होते है। ठीक इसी प्रकार फ्लोरिंग कलर भी सोच-समझकर चुने क्योंकि यह सकारात्मक या नकारात्मक ऊर्जा का संके हैं। चलिए आज हम आपको दिशा के मुताबिक फर्श के रंगों के बारे में बताते है जिनसे घर में पॉजिटिव एनर्जी का वास होता है।

पूर्व दिशा

घर की पूर्व दिशा भगवान सूर्य को भी समर्पित मानी जाती है। अगर इस दिशा के वास्तु दोष सही हो तो समाज में मान-सम्मान बना रहता है। अगर आप भी यही चाहते है तो घर की इस दिशा का फर्श डार्क ग्रीन कलर चुनें।

पश्चिम दिशा

वास्तु के मुताबिक, घर की पश्चिम दिशा में लक्ष्मी जी का वास होता है। इसलिए इस दिशा को दोषमुक्त रखने के लिए फर्श का रंग व्हाइट चुनें। ध्यान रखें कि इसपर कोई आकृति या डिजाइन न बनी हो।

उत्तर दिशा

अगर घर में खुशहाली चाहते है तो घर की उत्तर दिशा में डार्क ब्लेक कलर का फर्श लगवाना चाहिए क्योंकि इसे धन-कुबेर का स्थान माना जाता है।

दक्षिण दिशा

दक्षिण दिशा की तरफ कभी भी घर का प्रवेश द्वार नहीं होना चाहिए। वहीं, पति-पत्नी का बेडरूम भी इस दिशा में नहीं होना चाहिए क्योंकि इससे उनकी बीच लड़ाई-झगड़े बने रहते है। अगर चाहते है कि घर की इस दिशा से जुड़े वास्तु दोष दूर हो जाए तो फर्श का रंग हमेशा डार्क रेड चुनें।

उत्तर-पूर्व दिशा

इस जगह पर भगवान शिव का वास माना गया है। बात शिव जी की करें तो उन्हें आसमानी व नीला रंग बेहद पसंद होता है इसलिए इस दिशा का फर्श यानी फ्लोर भी इन्हीं रंगों में सिलेक्ट करें।

दक्षिण-पूर्व

घर की इस दिशा को सृष्टि के रचियता ब्रह्मा की दिशा कहा जाता है इसलिए इस दिशा में बैंगनी यानी पर्पल कलर का फर्श डलवाएं।

दक्षिण-पश्चिम दिशा

इस दिशा में हल्के रंगों का इस्तेमाल करना चाहिए। यहां तक कि फर्श का रंग भी हल्का गुलाबी ही चूज करें। इससे घर में पॉजिटिविटी बनी रहेगी।

उत्तर-पश्चिम दिशा

इस दिशा की दीवारों, पर्दों और यहां तक कि फर्श का रंग भी ग्रे होना चाहिए क्योंकि यह रंग इस दिशा के लिए सबसे शुभ माना जाता है।

स्वतंत्रता दिवस पर अपने लुक में कुछ चेंज करें जींस और टी-शर्ट को स्टाइल कर सकती हैं

15 अगस्त का दिन हर भारतवासी के लिए खास होता है। इस दिन हर कोई झंडा लहराता है। ऐसे में उनके कपड़े पहनने का अंदाज तिरंगे जैसा होता है। कई सारी महिलाएं इस दिन साड़ी पहनती हैं, तो कुछ सूट को स्टाइल करती हैं। लेकिन अगर आपको अपने लुक में कुछ चेंज करना है, तो आप जींस और टी-शर्ट को स्टाइल कर सकती हैं।

जींस और टी-शर्ट पहनने में काफी कंफर्टेबल होती है। साथ ही, पहनने के बाद अच्छी लगती है। चलिए आपको बताते हैं किस तरह की टी-शर्ट को आप जींस के साथ स्वतंत्रता दिवस पर पहन सकती हैं।

वंदे मातरम वाली टी-शर्ट करें स्टाइल

अगर आपको कुछ अलग ट्राई करना है, तो आप इस तरह के तिरंगे वाली वंदे मातरम लिखी हुई टी-शर्ट को स्टाइल कर सकती हैं। यह टी-शर्ट प्लेन होती है। बस आपको इसमें बीच में एक प्रिंट मिलता है, जिसमें आप वंदे मातरम या भारत माता की जय वाला प्रिंट भी ले सकती हैं। यह टी-शर्ट ब्लू जींस के साथ अच्छी लगेगी। इसमें आपका लुक भी अलग दिखेगा। मार्केट में इस तरह की प्रिंटेड टी-शर्ट आपको 100 से 250 रुपये में मिल जाएगी।

स्लोगन वाली टी-शर्ट

अगर आपकी देशभक्ति को और ज्यादा बढ़ाना है, तो आप ऐसे में स्लोगन वाली अलग-अलग डिजाइन की टी-शर्ट खरीद सकती हैं। इसमें आपको हर तरह के स्लोगन लिखे हुए मिलेंगे। इससे आपकी टी-शर्ट अलग नजर आएगी। इसमें आप कलर के साथ प्रिंट को भी चेंज करके ले सकती हैं। मार्केट में इस तरह की टी-शर्ट आपको 200 से 250 रुपये में मिल जाएगी। इसके साथ आपको ज्यादा एक्सेसरीज स्टाइल करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

दिल है हिंदुस्तानी टी-शर्ट

हर किसी का दिल हिंदुस्तानी होता है। इस तरह की टी-शर्ट भी पहनने के बाद अच्छी लगती है। साथ ही, इसमें प्रिंट भी आपको काफी खुला-खुला मिलता है। इसकी वजह से टी-शर्ट डिजाइन अच्छा लगता है। इसमें आप व्हाइट, ऑरेंज या ग्रीन कलर की टी-शर्ट को खरीद सकती हैं। साथ ही, इसे तिरंगे के प्रिंट में डिजाइन को खुद भी कस्टमाइज्ड करा सकती हैं। मार्केट में प्लेन टी-शर्ट आपको 100 से 200 रुपये में मिल जाएगी। इसपर प्रिंट करवाने के लिए आपको 150 रुपये देने पड़ेंगे।

इस बार 15 अगस्त को खास बनाने के लिए पहनें प्रिंटेड डिजाइन वाली टी-शर्ट। इसमें आप कम्फर्टेबल रहेंगी। साथ ही, आपका लुक भी अलग दिखाई देगा।

संपादकीय

कर्मो का फल तो सबको यही पर भुगतना पड़ता है

आदमी किसी भी क्षेत्र में काम करता हो,उसे अपने कर्मो का फल तो देरसबेर भुगतना पड़ता है। माना जाता है कि मनुष्य योनि कमयीनि है,यानी कर्म करने की योनि है,कर्म तो करना पडे़गा और आदमी जैसा कर्म करेगा,कर्म के अनुसार उसको वैसा फल भी भोगना पड़ेगा,कर्म करके मनुष्य कर्म फल भोगने से बच नहीं सकता, अच्छा कर्म किया है तो उसका अच्छा फल भोगना पड़ता है, बुरा कर्म किया है तो उसका बुरा फल भोगना पड़ता है ।आदमी व्यक्तिगत तौर पर कर्म करता है तो उसे उसका अच्छा बुरा फल व्यक्तिगत तौर पर भुगतना पड़ता है परिवार के तौर पर जब कर्म किया जाता है तो उसका फल पूरे परिवार को भोगना पड़ता है और समाज के तौर पर कोई कर्म किया जाता है तो समाज के तौर पर फल भोगना पड़ता है ।राजनीतिक व गैरराजनीतिक तौर पर जब कोई कर्म किया जाता है तो उसका फल उसके नेता सहित उसके तमाम कार्यकर्ताओं को भोगना पड़ता है।

हमारे देश में मान्यता है कि कर्मफल अटल है, वह टल नहीं सकता वह मिलेगा ही। किसी कर्म का फल तुरंत मिल जाता है जैसे कोई किसी को गाली देता है तो उसका फल उसे पिटाई या गाली के रूप में तुरंत मिल जाता है ।कुछ कर्मफल इसी जन्म में मिलते हैं कुछ कर्मफल ऐसे होते है जिनको दूसरे जन्म में भोगना पड़ता है। किसी राजनीतिक दल ने सत्ता में पंद्रह साल रहते हुए जो बुरे कर्म किए उसका फल उसको सत्ता में रहते हुए तो नहीं मिलता है लेकिन जब भी वह सत्ता से बाहर होता है तो उसका फल उसको मिलना शुरू हो जाता है ।कांग्रेस कई दशक तक सत्ता मे रही और कई दशकों में उसने जो कर्म किए थे अब जब वह सत्ता में नहीं है तो उसे अपने दशकों के कर्म का फल अब भुगतना पड़ रहा है ।ममता बैनर्जी १५ साल सत्ता में रही और जितने बुरे से बुरे कर्म पार्टी के लोगों ने किए और ममता उनको करने से नहीं रोकी तो उसका फल आज टीएमसी के नेताओं व ममता को भुगतना पड़ रहा है।

ममता बैनर्जी उसके भतीजे ने अपने विरोधी दलों के नेताओं के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया, विरोधियों के साथ पंद्रह सालो में मारपीट की गई,हत्या की गई,घर जला दिए गए ।लोगों को वोट डालने नहीं दिया,पंद्रह साल ममता की पार्टी ने विरोधियों के साथ, जनता के साथ बहुत व्यवहार किया और आज जब वह सत्ता में नही है तो कभी ममता के भांजे के साथ भीड़ मारपीट कर रही,उन पर अंडे फेंक रही है,कभी टीएमसी के सांसदों पर नाराज लोग अंडे फेंक रहे हैं ।पं.बंगाल के उत्तर २४ परगना जिले के हली शहर में पूर्व सीएम ममता बैनर्जी के काफिले पर नाराज लोगों की भीड़ ने कीचड़,ईंट पत्थर,जूते,चप्पल से हमला कर दिया। ममता का आरोप है कि मेरी काफिले पर पुलिस के सामने हमला हुआ और पुलिस ने कुछ नहीं किया। हम सब मारे जा सकते थे, हम लोगों के सिर फूट सकते थे। मैंने ऐसा होते कभी नहीं देखा था।

ममता और उनकी पार्टी के नेताओं के साथ कुछ भी ऐसा नहीं हो जो उनके शासन में विरोधी लोगों के साथ नहीं हुआ है, उनके साथ वही हो रहा है,उनके शासन में उनकी पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं के इशारे पर विरोधियों के साथ होता था.तब भी पुलिस किसी को नहीं बचाती थी,आज ममता को पुलिस से शिकायत है, पुलिस को ऐसा उन्होंने ही बनाया है, किसी को बचाना नहीं है। पुलिस वही कर रही है जो उनके समय होता था। ममता को पं.बंगाल की जनता एहसास करा रही है कि उसके पंद्रह साल में उनके साथ जो बुरा किया गया,वह सब जनता ममता व उनके नेताओं को लौटा रही है ।यह ममता व उनके नेताओं का कर्मफल है कि भीड़ उनके समय विरोधियों का साथ जो करती और वही भीड़ उनके साथ वही कर रही है तो बुरा लग रहा है, मरने से डर लग रहा है ।यह सबके होता है जो आपने लोगों को दिया होता है,वही लोग आपको लौटाते हैं, जब देते वक्त बुरा नहीं लगता है तो लेते वक्त भी बुरा नहीं लगना चाहिए क्योंकि जो लोगों को आपने दिया था, वही लोग आपको लौटा रहे हैं।

ममता ही उनके नेताओं ने जनता के साथ बुरा किया है, अब जनता उनके साथ बुरा कर रही है तो उनको जनता के बीच जाने से डर लग रहा है। महुआ मोइत्रा को पूछताछ के लिए थाने बुलाया गया तो वह थाने जाने से डर रही है कि इस दौरान लोग उनको अंडे मारेंगे ।वह सुप्रीम कोर्ट गई थी कि उनका बयाने आनलाइन देने की सुविधा दी जाए ।सुप्रीम कोर्ट ने ऐसा करने से मना कर दिया और कहा कि आप कैसी नेता है, अंडे से डर रही हैं ।इससे साफ हो जाता है कि टीएमसी के जो नेता सत्ता में शेर बने रहते हैं और लोगों के साथ बुरे से बुरा व्यवहार करते थे और उनके साथ भीड़ बुरा व्यवहार कर रही है तो उनको अच्छी व्यवस्था चाहिए, सुरक्षा चाहिए ताकि उनके साथ कोई बुरा व्यवहार न कर सके ।सत्ता मे रहने वाले अन्याय करते हैं तो जनता उनके साथ न्याय करती है और अन्याय करने वालों को न चाहकर भी जनता के न्याय को मानना पड़ता है ।बंगाल की जनता के साथ ममता ने न्याय नहीं किया था, जनता ममता को एहसास करा रही है तुम्हारे साथ वही हो रहा है जो तुमने दूसरो के साथ किया, और बरसों किया।

झारखंड का छात्र आंदोलन : सवाल सिर्फ परीक्षा का नहीं, व्यवस्था के भरोसे का है

सौरभ वार्ष्णेय

दिल्ली के जंतर मंतर पर केंद्रीय शिक्षा मंत्री के इस्तीफे के बाद अब झारखंड की राजधानी रांची इन दिनों केवल प्रशासनिक गतिविधियों का केंद्र नहीं दूसरा जंतर मंतर बनी हुई है। जयपाल सिंह मुंडा स्टेडियम में 25 जुलाई से चल रहा छात्र आंदोलन उस बेचैनी की आवाज बन गया है, जो वर्षों से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे लाखों युवाओं के मन में पल रही है। छात्रों का आरोप है कि झारखंड लोक सेवा आयोग यानी जेपीएससी और झारखंड कमर्चारी चयन आयोग यानी जेएसएससी की प्रतियोगी परीक्षाओं में कथित धांधली, पेपर लीक और व्यापक अनियमितताओं ने उनकी मेहनत, समय और भविष्य पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। उनकी मांग है कि पूरे मामले की उच्चस्तरीय जांच केंद्रीय जांच ब्यूरो यानी सीबीआई से कराई जाए, संदिग्ध परीक्षाओं को रद्द किया जाए और दोषियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई हो। यह आंदोलन महज कुछ परीक्षाओं को लेकर छात्रों का आक्रोश नहीं है। इसके भीतर उस व्यवस्था के प्रति अविश्वास दिखाई देता है, जिसमें एक सामान्य मध्यमवर्गीय या गरीब परिवार का युवा वर्षों तक किताबों के बीच अपना जीवन खपा देता है। वह सरकारी नौकरी को केवल रोजगार नहीं, बल्कि सामाजिक सुरक्षा, परिवार के भविष्य और अपनी मेहनत की सफलता का माध्यम मानता है। ऐसे में यदि उसे यह महसूस होने लगे कि परीक्षा में उसकी मेहनत से ज्यादा प्रभाव किसी लीक, सिफारिश, भ्रष्टाचार या प्रशासनिक लापरवाही का है, तो समस्या केवल एक परीक्षा की नहीं रहती; वह लोकतांत्रिक संस्थाओं की विश्वसनीयता का प्रश्न बन जाती है।

छात्रों की प्रमुख मांगों में कथित अनियमितताओं की सीबीआई जांच, प्रभावित परीक्षाओं—जिनमें 14वीं जेपीएससी और जेएसएससी-सीजीएल जैसी परीक्षाओं का उल्लेख किया जा रहा है—की निष्पक्ष समीक्षा तथा आवश्यकता पड ? पर उन्हें रद्द कर दोबारा आयोजित करना शामिल है। छात्र यह भी चाहते हैं कि परीक्षा संचालन प्रणाली को पारदर्शी बनाया जाए और जिन लोगों की भूमिका अनियमितताओं में सामने आती है, उनके खिलाफ कठोर कानूनी कार्रवाई हो। सवाल यह है कि सरकार इस आक्रोश को केवल आंदोलन मानकर देखेगी या इसे व्यवस्था में सुधार का अवसर बनाएगी? प्रतियोगी परीक्षा में शामिल होने वाला छात्र यदि एक उत्तर गलत लिख देता है तो उसका परिणाम बदल सकता है। लेकिन जब परीक्षा व्यवस्था में ही गंभीर त्रुटि हो जाए तो हजारों छात्रों के परिणाम बदल जाते हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि छात्र की गलती के लिए कोई माफी नहीं होती, जबकि व्यवस्था की गलती का खामियाजा वर्षों तक छात्रों को भुगतना पड़ता है।

एक छात्र परीक्षा के लिए वर्षों तैयारी करता है। महंगी कोचिंग लेने की क्षमता न हो तो वह पुस्तकालय, हॉस्टल, किराए के कमरे या घर के एक छोटे से हिस्से में बैठकर तैयारी करता है। कई छात्र उम्र की सीमा के कारण अंतिम अवसर पर परीक्षा देते हैं। ऐसे में परीक्षा के बाद यदि पेपर लीक, प्रश्नपत्र की गोपनीयता, उत्तर पुस्तिका, परिणाम या चयन प्रक्रिया को लेकर सवाल उठते हैं तो उस छात्र की स्थिति को समझना आवश्यक है ।उसके लिए यह सिर्फ एक परीक्षा नहीं है। उसके पीछे उसके माता-पिता की उम्मीदें, परिवार की आर्थिक परिस्थितियां और उसके जीवन के कई वर्ष जुड़े होते हैं। यही कारण है कि सरकार को छात्रों के आक्रोश को राजनीतिक चश्मे से देखने के बजाय प्रशासनिक और मानवीय दृष्टि से देखना चाहिए।

छात्रों की सबसे प्रमुख मांग सीबीआई जांच की है। यहां सरकार के सामने दोहरी चुनौती है। पहली चुनौती यह तय करना कि क्या मौजूदा जांच व्यवस्था छात्रों का विश्वास हासिल करने में सक्षम है। दूसरी चुनौती यह है कि यदि सरकार को अपनी जांच पर पूरा भरोसा है तो उसे जांच की पारदशिर्ता को लेकर छात्रों की आशंकाओं का समाधान कैसे करना है। बताया गया है कि झारखंड सीआईडी कथित अनियमितताओं की जांच कर रही है। जांच के दौरान जेपीएससी के पूर्व अध्यक्ष एल. खियांगते से पूछताछ की गई है और अब तक 19 लोगों की गिरफ्तारी की बात सामने आई है। यदि जांच में गिरफ्तारियां हुई हैं तो यह संकेत है कि मामला प्रशासन के लिए गंभीर है। लेकिन गिरफ्तारी अपने आप में अंतिम निष्कर्ष नहीं होती। असली सवाल यह है कि कथित अनियमितताओं का पूरा नेटवर्क क्या था? प्रश्नपत्र या परीक्षा प्रक्रिया से छेड़छाड़ किस स्तर पर हुई? किसे लाभ मिला? किसने आर्थिक या प्रशासनिक लाभ उठाया? और क्या इसमें कोई संगठित गिरोह शामिल था? सीबीआई जांच की मांग को केवल राजनीतिक दबाव या प्रशासन पर अविश्वास के रूप में खारिज कर देना भी उचित नहीं होगा। यदि छात्रों का एक बड़ा वर्ग किसी जांच एजेंसी पर भरोसा नहीं कर रहा है तो सरकार को उस अविश्वास के कारणों को समझना चाहिए ।लोकतंत्र में जांच की निष्पक्षता जितनी महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण है उसका निष्पक्ष दिखाई देना। छात्रों की मांगों में संदिग्ध अथवा प्रभावित परीक्षाओं को रद्द करने की बात भी है। यह मांग भावनात्मक रूप से समझ में आती है, लेकिन इसके साथ एक कठिन प्रशासनिक प्रश्न जुड़ा है। यदि परीक्षा में व्यापक स्तर पर गड़बड़ी प्रमाणित होती है तो परीक्षा को रद्द करना आवश्यक हो सकता है। लेकिन यदि केवल कुछ केंद्रों या कुछ अभ्यर्थियों तक अनियमितता सीमित है तो क्या लाखों अभ्यर्थियों की पूरी परीक्षा रद्द कर दी जाए? यह फैसला केवल राजनीतिक दबाव में नहीं, ठोस जांच और प्रमाणों के आधार पर होना चाहिए ।क्योंकि परीक्षा रद्द होने का अर्थ केवल प्रश्नपत्र दोबारा छपना नहीं है। इसका अर्थ है हजारों छात्रों के कई महीने या कई वर्ष फिर से परीक्षा की तैयारी में लगना। उम्र सीमा के करीब पहुंच चुके अभ्यर्थियों के लिए यह फैसला और भी गंभीर हो सकता है ।इसलिए सरकार को एक स्पष्ट, वैज्ञानिक और पारदर्शी मानक बनाना चाहिए—किस परिस्थिति में परीक्षा रद्द होगी, किस स्थिति में प्रभावित केंद्रों की परीक्षा दोबारा होगी और किस स्थिति में केवल दोषी अभ्यर्थियों या अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। नियम स्पष्ट होंगे तो विवाद कम होंगे।

छात्रों से बातचीत के लिए झारखंड सरकार द्वारा चार सदस्यीय दल गठित किया जाना सकारात्मक कदम माना जा सकता है। इससे कम से कम संवाद का रास्ता खुला है। छात्रों ने भी बातचीत के लिए तैयार होने की बात कही है। यही वह अवसर है जहां सरकार को अपनी संवेदनशीलता और प्रशासनिक क्षमता दोनों दिखानी होंगी। छात्रों को बुलाकर उनकी बातें सुन लेना पर्याप्त नहीं है। उन्हें यह भी बताना होगा कि सरकार उनकी किन मांगों को मानने को तैयार है, किन पर जांच के बाद निर्णय लिया जाएगा और किन मांगों को किन कानूनी या प्रशासनिक कारणों से स्वीकार नहीं किया जा सकता ।सबसे खतरनाक स्थिति वह होगी जिसमें बैठक हो, तस्वीरें खिंचें, बयान जारी हों और फिर सब कुछ पहले की तरह चलता रहे। छात्रों को आश्वासन नहीं, समयबद्ध रोडमैप चाहिए।

झारखंड की घटना को केवल राज्य की स्थानीय समस्या मानना भूल होगी। देश के अनेक राज्यों में प्रतियोगी परीक्षाओं की विश्वसनीयता को लेकर समय-समय पर सवाल उठते रहे हैं। कभी प्रश्नपत्र की गोपनीयता पर प्रश्न उठते हैं, कभी परिणामों पर, कभी परीक्षा केंद्रों की व्यवस्था पर तो कभी भर्ती प्रक्रिया की पारदशिर्ता पर ।इसका सबसे बड़ा नुकसान उस युवा को होता है जो सरकारी नौकरी के लिए अपना भविष्य दांव पर लगाता है ।भारत युवा देश है। हर वर्ष लाखों युवा रोजगार बाजार में प्रवेश करते हैं। निजी क्षेत्र में अवसरों की अपनी सीमाएं हैं और सरकारी नौकरी अब भी बड़ी संख्या में परिवारों के लिए स्थिर करियर का आकर्षण रखती है। इसलिए सरकारी भर्ती परीक्षाओं की विश्वसनीयता राष्ट्रीय महत्व का विषय है।

यदि प्रतियोगी परीक्षा की व्यवस्था पर भरोसा टूटता है तो युवा व्यवस्था से विमुख हो सकता है। और जिस देश की युवा शक्ति व्यवस्था से निराश होने लगे, उसके लिए यह केवल रोजगार का संकट नहीं, सामाजिक स्थिरता का भी प्रश्न बन सकता है।

एक प्रश्नपत्र लीक होने का मतलब है हजारों ईमानदार छात्रों के अधिकारों की चोरी। इसका अर्थ है किसी दूसरे व्यक्ति को अनुचित लाभ देना। इसका अर्थ है मेहनत और योग्यता की जगह पैसा, संपर्क या आपराधिक नेटवर्क को बढ़ावा देना ।अगर परीक्षा व्यवस्था में कोई व्यक्ति प्रश्नपत्र बेचता है तो वह केवल कानून नहीं तोड़ता, बल्कि युवाओं के भविष्य से खिलवाड़ करता है। इसलिए पेपर लीक के मामलों में कार्रवाई भी उसी गंभीरता से होनी चाहिए। केवल छोटे कमर्चारियों या बिचौलियों को पकड़कर जांच समाप्त नहीं होनी चाहिए। यदि किसी बड़े अधिकारी, परीक्षा संचालक, निजी संस्था या संगठित गिरोह की भूमिका सामने आती है तो उसकी तह तक जाना होगा। आज तकनीक के दौर में परीक्षा व्यवस्था को पहले की तुलना में कहीं अधिक सुरक्षित बनाया जा सकता है। प्रश्नपत्रों की डिजिटल एन्क्रिप्शन व्यवस्था, सुरक्षित प्रिंटिंग, ट्रैकिंग सिस्टम, परीक्षा केंद्रों की निगरानी, सीसीटीवी, बायोमेट्रिक सत्यापन और डेटा ऑडिट जैसी व्यवस्थाएं पारदर्शिता बढ़ा सकती हैं। तकनीक के पीछे बैठे व्यक्ति की नीयत और संस्थागत जवाबदेही अधिक महत्वपूर्ण है। इसलिए हर परीक्षा के बाद एक स्वतंत्र ऑडिट व्यवस्था होनी चाहिए। परीक्षा से जुड़े अधिकारियों और निजी एजेंसियों की जवाबदेही तय होनी चाहिए। किसी भी शिकायत के लिए समयबद्ध शिकायत निवारण तंत्र होना चाहिए ।सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि परीक्षा संस्था को राजनीतिक और प्रशासनिक दबाव से मुक्त पेशेवर वातावरण मिलना चाहिए।

सरकार की जवाबदेही जितनी जरूरी है, छात्रों की जिम्मेदारी भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। शांतिपूर्ण आंदोलन लोकतंत्र का मजबूत हथियार है। छात्रों द्वारा शांतिपूर्ण प्रदर्शन किया जाना स्वागतयोग्य है ।लेकिन आंदोलन हिंसा, तोडफोड़ या सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाने की दिशा में नहीं जाना चाहिए। किसी भी आंदोलन की नैतिक ताकत उसकी शांतिपूर्ण प्रकृति में होती है ।सरकार को भी छात्रों को अपराधी या विरोधी राजनीतिक समूह के रूप में देखने से बचना चाहिए। छात्र सवाल पूछ रहे हैं तो लोकतंत्र में सवाल का जवाब देना सरकार का दायित्व है।

झारखंड सरकार के सामने इस समय सबसे जरूरी काम विश्वास बहाली का है। इसके लिए कुछ स्पष्ट कदम उठाए जा सकते हैं ।पहला, जांच की प्रगति सार्वजनिक रूप से बताई जाए ।दूसरा, जिन परीक्षाओं पर गंभीर आरोप हैं, उनके संबंध में स्वतंत्र तकनीकी और कानूनी समीक्षा कराई जाए ।तीसरा, यदि व्यापक गड़बड़ी प्रमाणित होती है तो परीक्षा रद्द करने अथवा पुनपरीक्षा का स्पष्ट निर्णय समयबद्ध तरीके से लिया जाए ।चौथा, छात्रों की शिकायतों के लिए स्वतंत्र हेल्पलाइन और पोर्टल बनाया जाए ।पांचवां, परीक्षा प्रक्रिया में शामिल सभी अधिकारियों और एजेंसियों की जवाबदेही तय हो ।छठा, भविष्य की परीक्षाओं के लिए ऐसी सुरक्षा व्यवस्था बनाई जाए जिसमें प्रश्नपत्र की गोपनीयता से लेकर परिणाम तक प्रत्येक चरण का डिजिटल रिकॉर्ड मौजूद हो ।और सबसे महत्वपूर्ण—सरकार को छात्रों के साथ लगातार संवाद बनाए रखना चाहिए।

आज का छात्र केवल नौकरी नहीं मांग रहा। वह यह भरोसा मांग रहा है कि यदि वह ईमानदारी से मेहनत करेगा तो उसके साथ न्याय होगा। यह भरोसा किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था की सबसे बड़ी पूंजी है ।झारखंड का छात्र यदि यह विश्वास खो देता है कि परीक्षा में मेहनत का मूल्य है, तो यह पूरे समाज के लिए चिंताजनक स्थिति होगी। क्योंकि जिस व्यवस्था में योग्यता पर संदेह पैदा हो जाए, वहां प्रतिभा धीरे-धीरे व्यवस्था से बाहर जाने लगती है ।आज रांची के जयपाल सिंह मुंडा स्टेडियम में बैठे छात्रों की आवाज को इसलिए केवल धरना-प्रदर्शन की आवाज नहीं समझना चाहिए। यह उस पीढ़ी का सवाल है जो अपने भविष्य का रास्ता तलाश रही है।

संकट इसलिए कि परीक्षा व्यवस्था की विश्वसनीयता पर प्रश्न उठे हैं ।अवसर इसलिए कि इसी बहाने झारखंड अपनी भर्ती प्रणाली को देश की सबसे पारदर्शी और विश्वसनीय प्रणालियों में बदल सकता है। सरकार चाहे तो इस आंदोलन को बातचीत, जांच और सुधार के जरिए समाप्त कर सकती है। लेकिन यदि छात्रों को केवल आश्वासन देकर टालने की कोशिश हुई, तो यह आंदोलन किसी एक परीक्षा का आंदोलन नहीं रहेगा। इसलिए झारखंड सरकार को यह समझना होगा कि छात्र आंदोलन को दबाने से समस्या समाप्त नहीं होगी। समस्या का समाधान केवल सत्य, पारदर्शिता और न्याय से होगा। और जिस दिन सरकार यह संदेश देने में सफल हो जाएगी कि झारखंड में नौकरी योग्यता से मिलेगी, प्रश्नपत्र पैसे से नहीं बिकेगा और परीक्षा व्यवस्था किसी दबाव के आगे नहीं झुकेगी, उसी दिन इस आंदोलन की सबसे बड़ी मांग पूरी हो जाएगी।

इलाज के बाद बची बीमारी : अस्पतालों के नीचे दफन होता भविष्य

आरके जैन

कूड़े का कोई टुकड़ा सिर्फ कूड़ा नहीं, खासकर जब वह अस्पताल से निकला हो। उसे जमीन में दबाने से खतरा खत्म नहीं होता; वह मिट्टी और पानी के रास्ते इंसानी जिंदगी तक पहुंच सकता है। मेडिकल कचरे के गलत निपटान पर राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) की सख्ती ने स्वास्थ्य व्यवस्था की अनदेखी उजागर की है। सत्रह राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों की 9,178 स्वास्थ्य सुविधाओं की जांच में केवल 5,715 नियमों के अनुरूप मिलीं। बाकी में भूजल सुरक्षा की अनदेखी, जरूरी अनुमति का अभाव, गलत जगह गड्ढे और जानवरों की पहुंच रोकने में लापरवाही मिली। जिस अस्पताल में बीमारी का इलाज होता है, वहीं संक्रमित कचरे का गलत निपटान इलाज और प्रदूषण की सीमा मिटा देता है। सवाल सिर्फ कचरे का नहीं, मिट्टी, पानी और उन परिवारों की जिंदगी का है, जो इसकी कीमत चुका सकते हैं।

धरती के गर्भ में दबा कचरा आंखों से ओझल हो सकता है, असर नहीं। संक्रमित कचरा भूजल तक न पहुंचे, इसलिए गहरे गड्ढे में दफन की प्रक्रिया के नियम कड़े हैं। जहां साझा जैव-चिकित्सा कचरा उपचार सुविधा नहीं है, वहां दूरदराज और ग्रामीण क्षेत्रों में तय शर्तों पर गहरे गड्ढे में दफन की अनुमति है। गड्ढे जलस्रोतों और आबादी से सुरक्षित दूरी पर हों, भूजल स्तर गड्ढे के निचले हिस्से से कम से कम छह मीटर नीचे हो, कचरे को मिट्टी और चूने से ढकना तथा जानवरों की पहुंच रोकना जरूरी है। लेकिन नियमों की ताकत उनके पालन में है। सुविधा के नाम पर छोटी-सी लापरवाही प्रकृति के लिए वर्षों का संकट बन सकती है।

जब आंकड़े जमीन पर उतरते हैं, वे सिर्फ संख्या नहीं रहते, किसी की जिंदगी का खतरा बन जाते हैं। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की जांच में 477 सुविधाओं में भूजल सुरक्षा उल्लंघन मिले। 341 के पास जरूरी अनुमति नहीं थी और 316 में स्थल चयन तय मानकों के अनुरूप नहीं मिला। 253 जगह अभिलेख रखने में लापरवाही, 229 स्थानों पर जानवरों की पहुंच रोकने की व्यवस्था नहीं थी और 216 जगह कचरे को पर्याप्त मिट्टी से ढकने में कमी मिली। उत्तर प्रदेश की 111 और राजस्थान की 33 स्वास्थ्य सुविधाओं में पूर्ण गैर-अनुपालन दर्ज हुआ। इन आंकड़ों को गांव के नक्शे पर रखें तो तस्वीर बदल जाती है। कहीं वह कुआं हो सकता है, जहां से परिवार पानी भरता है; कहीं वह खेत, जहां अगली फसल बोई जानी है।

खतरा अस्पताल से निकलते ही खत्म नहीं होता, कई बार कचरे के साथ शुरू होता है। चिंता केवल नियम टूटने की नहीं, बल्कि नियम टूटने पर भी व्यवस्था चलते रहने की है। चिकित्सकीय कचरे का खतरा मात्रा से अधिक उसकी प्रकृति में है। संक्रमित सामग्री, शरीर के अवशेष और रक्त या जैविक द्रव से सनी वस्तुओं का सुरक्षित उपचार जरूरी है। ऐसे कचरे तक पशु पहुंचें या भूजल से संपर्क हो, तो संक्रमण अस्पताल से बाहर फैल सकता है। इसलिए चिकित्सकीय कचरा केवल पर्यावरण मंत्रालय या प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड का नहीं, सार्वजनिक स्वास्थ्य का प्रश्न है। अस्पताल की स्वच्छता शल्य कक्ष में नहीं, कचरे के अंतिम पड़ाव पर परखी जाती है।

दुर्गम पहाड़ और लंबी दूरियां कठिनाई हो सकती हैं, जिम्मेदारी से मुक्ति का कारण नहीं। पूर्वोत्तर राज्यों, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में दुर्गम भूभाग, कम आबादी और परिवहन कठिनाइयां साझा उपचार संयंत्रों की पहुंच सीमित करती हैं। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के दस्तावेजों में ऐसे राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों का उल्लेख है, जहां साझा जैव-चिकित्सा कचरा उपचार सुविधाएं पूरी नहीं हैं और दूरस्थ स्वास्थ्य सुविधाएं स्थानीय उपचार, जिसमें गहरे गड्ढे में दफन शामिल है, पर निर्भर हैं। कुछ क्षेत्रों में साझा उपचार संयंत्र स्थापित करने की प्रक्रिया तेज करने के निर्देश दिए गए हैं। मगर समाधान दूरस्थ क्षेत्रों को नियमों से मुक्त करना नहीं, वहां नियमों के पालन की तकनीकी और आर्थिक क्षमता पहुंचाना है।

अब सवाल आदेश जारी होने का नहीं, आठ सप्ताह में बदलाव दिखने का है। एनजीटी ने केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को जैव-चिकित्सा कचरा निपटान के नियमों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करने को कहा है। पालन न होने पर पर्यावरण संरक्षण अधिनियम की धारा 5 के तहत कठोर निर्देश दिए जा सकते हैं और अगली सुनवाई 28 अक्टूबर को है। लेकिन अदालत की समयसीमा को नई रिपोर्ट बनाने की अवधि बना देना इस संकट के साथ अन्याय होगा। हर उल्लंघनकारी सुविधा की दोबारा जांच हो, जिम्मेदारी तय हो, पुराने दफन गड्ढों का लेखा बने, भूजल जांच हो और सुधार का स्वतंत्र सत्यापन किया जाए। केंद्रीय और राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों को कागजी निरीक्षण से आगे बढ़कर सुनिश्चित करना होगा कि जिसे ह्यअनुपालनह्ण बताया जा रहा है, वहां जमीन भी वही सच बयान करे।

किसी समाज की असली पहचान इस बात से होती है कि वह अपनी सुविधा की कीमत किसे चुकाने देता है। हम ऐसी स्वास्थ्य व्यवस्था नहीं बना सकते जो मरीज को बचाकर उसके आसपास की मिट्टी और पानी को खतरे में डाल दे। राज्यों को नियमित निरीक्षण, प्रशिक्षित कमर्चारी, पारदर्शी अभिलेख, आधुनिक उपचार सुविधाएं और साझा जैव-चिकित्सा कचरा उपचार केंद्रों का विस्तार करना होगा। जहां गहरे गड्ढे में दफन करना अपरिहार्य है, वहां हर शर्त अक्षरशः लागू हो; जहां साझा उपचार केंद्र उपलब्ध है, वहां जोखिमपूर्ण कचरे को गड्ढे में दफन करने की गुंजाइश ही क्यों रहे? धरती तुरंत शिकायत नहीं करती, पानी भी कोई मुकदमा दर्ज नहीं कराता। लेकिन प्रदूषण का हिसाब पीढ़ियों तक चलता है। इसलिए अब चिकित्सकीय कचरे को छिपाना नहीं, उसकी पूरी यात्रा को जवाबदेह बनाना होगा—अस्पताल के द्वार से अंतिम उपचार तक। क्योंकि बीमारी से लड़ने वाला अस्पताल यदि अपनी ही छाया में बीमारी दफना रहा है, तो सवाल सिर्फ गड्ढे की गहराई का नहीं, हमारी जिम्मेदारी की गहराई का है।

परीक्षा की घड़ी

ऐसे वक्त में जब नीट परीक्षा प्रश्नपत्र लीक होने से उपजे छात्र आक्रोश से देश हाल ही में दो-चार हुआ है, देश के परीक्षा सिस्टम पर प्रतिभागियों का भरोसा कायम करना अपरिहार्य शर्त है। हाल के वर्षों में केंद्रीय स्तर और राज्यों में विभिन्न परीक्षाओं के प्रश्नपत्र लीक होने, परीक्षाएं स्थगित होने और परीक्षा परिणामों को लेकर किंतु-परंतु होने की खबरें अक्सर सामने आती रहती हैं।

झारखंड लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में अनियमितताओं को लेकर छात्रों का आंदोलन बदस्तूर जारी है। ऐसे में विश्वसनीयता के सवालों से जूझ रही नेशनल टेस्टिंग एजेंसी यानी एनटीए का इंटेलिजेंस, कानून लागू करने वाली एजेंसियों तथा डिफेंस फोर्सेज के अनुभवी लोगों को अपने परीक्षा सुरक्षा कमांड सेंटर में शामिल करने का निर्णय एक स्वागत योग्य कदम है। ये प्रयास दूसरी ओर हमें यह भी बताते हैं कि देश में महत्वपूर्ण प्रवेश परीक्षाएं कितनी संवेदनशील व असुरक्षित हो गई हैं। नए प्रावधानों के अनुसार इसके टेस्ट सिक्योरिटी और लाइव ऑपरेशन्स अनुभाग के प्रस्तावित जनरल मैनेजर परीक्षा प्रक्रिया के लगभग हर संवेदनशील हिस्से की देखरेख करेंगे, जिसके अंतर्गत प्रश्नपत्र तैयार करने, एन्क्रिप्शन से लेकर ट्रांसपोर्टेशन, स्टोरेज, वितरण और रियल-टाइम मॉनिटरिंग भी शामिल रहेगा। विश्वास किया जाना चाहिए कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता, बायोमेट्रिक ऑथेंटिकेशन, सीसीटीवी निगरानी और परीक्षा के उपरांत डेटा एनालिसिस से परीक्षा व्यवस्था के पारदर्शी व विश्वसनीय होने की उम्मीद की जा सकती है। निस्संदेह, नीट प्रवेश परीक्षा विवाद के उपरांत प्रतिभागियों में भरोसा कायम करने की दिशा में यह एक गंभीर कोशिश होती नजर आती है। लेकिन एक बात तो तय है कि सिर्फ तकनीक के जरिए सिस्टम की खामियां दूर नहीं की जा सकतीं। हालिया नीट-यूजी पेपर लीक प्रकरण में सीबीआई की जांच में एनटीए के अपने ही गोपनीय विभाग में खामियां पाई गई थीं, मसलन संतोषजनक ढंग से तलाशी न लेना, सीसीटीवी की अपर्याप्त निगरानी, जिम्मेदारियों का सही बंटवारा न होना तथा अंतिम प्रश्न सेट तक बहुत अधिक लोगों की पहुंच होना, जिसने परीक्षा प्रश्नपत्र के लीक संकट को जन्म दिया।

दरअसल, सीबीआई जांच में यह तथ्य भी सामने आया है कि परीक्षा प्रश्नपत्र तैयार करने वाले विशेषज्ञ एक-दूसरे के संपर्क में थे, जिससे परीक्षा की गोपनीयता की सुरक्षा का एक बुनियादी नियम भंग हो गया। वास्तव में, नियमानुसार किसी भी एक व्यक्ति की पहुंच पेपर के सभी फाइनल सेट तक नहीं होनी चाहिए। सबसे बड़ी चिंता की बात यह है कि इस कथित गड़बड़ी के लिए किसी हाई-लेवल हैकिंग की जरूरत नहीं पड़ने दी गई। दरअसल, भ्रष्ट लोगों ने परीक्षा प्रक्रिया की मामूली खामियों का फायदा चालाकी से उठाया। निस्संदेह, यह बात किसी भी साइबर खतरे के मुकाबले नीति बनाने वालों के लिए चिंता की बात होनी चाहिए। इसमें दो राय नहीं कि दो सप्ताह पूर्व ही धर्मेंद्र प्रधान की जगह शिक्षा मंत्री बने प्रह्लाद जोशी के कंधों पर एक मजबूत, पारदर्शी और भरोसेमंद परीक्षा सिस्टम बनाने की बड़ी जिम्मेदारी है। उन्हें विषय की संवेदनशीलता को समझते हुए तुरंत विश्वास बहाली के लिए काम आरंभ करना होगा, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि न केवल छात्र, बल्कि उनके अभिभावक व सारा देश फिर से निराश न हो सके। इसी तरह, एनटीए का प्रस्तावित कमांड सेंटर सिर्फ अफसरशाही का एक और विस्तार बनकर नहीं रह जाना चाहिए।

WWE इतिहास में ब्रॉक लैसनर की सबसे खतरनाक फाइट्स

बिग शो के साथ तो टूट गया था पूरा रिंग

नई दिल्ली। ढ्ढ्ढ्ढश्व के महान रेसलर ब्रॉक लैसनर ने पिछले हफ्ते समरस्लैम 2026 के बाद कंपनी को अलविदा कह दिया। मंडे नाइट रॉ के पिछले एपिसोड में ब्रॉक को ट्रिब्यूट दिया गया और उनका नाम एल्यूमिनी लिस्ट में भी डाला गया। उनके करियर का अंत जरूर हार के साथ हुआ लेकिन पिछले 26 साल के करियर में लैसनर ने कई बड़ी उपलब्धियां हासिल कीं। उनके करियर में कई ऐसे यादगार मैच भी रहे जब रिंग या तो खून से लाल रंग में तब्दील हो गया। या एक बार पूरा रिंग ही टूट गया। ब्रॉक लैसनर के करियर की ऐसी ही खतरनाक फाइट्स के बारे में बात करेंगे। इसमें उनकी अंडरटेकर, जॉन सीना, रोमन रेंस, बिग शो और कोडी रोड्स जैसे बेहतरीन रेसलर्स से हुए मुकाबलों का विवरण है। इसमें से एक मैच उनका और बिग शो का बहुत मशहूर हुआ था जब रिंग ही चारों तरफ से टूट गया था।

- **ब्रॉक लैसनर बनाम बिग शो– स्मैकडाउन, जून 2003–** 2003 में WWE का एक दौर था जब ब्रॉक लैसनर और बिग शो के बीच खतरनाक राइवलरी देखने को मिलती थी। उसी बीच जून 2003 में ब्रॉक लैसनर और बिग शो का मुकाबला एक स्मैकडाउन के शो में हुआ। WWE चैंपियनशिप के लिए हो रहे इस मुकाबले में दोनों के बीच बेहतरीन टक्कर देखने को मिली। इसी दौरान लैसनर ने रस्सी के ऊपर खड़े होकर 500 पाउंड के बिग शो को सुपरप्लेक्स दिया। जैसे दोनों रेसलर रिंग के बीच में गिरते हैं तो रिंग ही चारों तरफ से टूट गया। यह कंपनी के इतिहास में पहली बार देखने को मिला था। इसलिए यह मैच WWE में ब्रॉक लैसनर के सबसे यादगार फाइट्स में से एक है।
- **ब्रॉक लैसनर बनाम जॉन सीना– WWE E&treme Rules 2012–** ब्रॉक लैसनर ने 2012 में अपने दूसरे कार्यकाल के दौरान कंपनी में वापसी की थी। उस समय उनकी राइवलरी थी जॉन सीना के साथ दोनों के बीच एक्ट्रीम रूल्स 2012 में कांटे की टक्कर देखने को मिली। इस मैच में दोनों रेसलर खून से लथपथ थे। लैसनर ने शुरुआती क्षणों में ही अपनी कोहनी से सीना का सिर लहूलुहान कर दिया था। इस मैच में इसके बाद मेटल चेन जैसे कई खतरनाक उपकरण भी इस्तेमाल हुए।
- **ब्रॉक लैसनर बनाम द अंडरटेकर– WWE No Mercy 2002–** ब्रॉक लैसनर ने 2002 में कंपनी में डेब्यू किया था। उस वक्त उनका नाम मेन रोस्टर में आते ही चर्चा का विषय था। लैसनर ने उस समय के दिग्गज हल्क होगन को हराकर सभी को चौंकाया था। फिर उनका सामना होना था डेडमैन द अंडरटेकर के साथ। नो मर्सी 2002 में दोनों की फाइट तय हुई। इस मैच को जाल में कराया गया। मैच शुरू होने के कुछ ही देर बाद अंडरटेकर के एक प्रहार से लैसनप का माथा लहूलुहान हो गया था। फिर लैसनर ने भी अंडरटेकर पर स्टील की सीढ़ियों से प्रहार किया और वह भी खून से लथपथ हो गए।
- **ब्रॉक लैसनर बनाम रोमन रेंस– WWE WrestleMania 31, 2014–** 2014 का यह वो दौर था जब लैसनर को दोबारा वापसी करे दो साल हो चुके थे। वहीं नए स्टार रोमन रेंस को कंपनी पुश कर रही थी। उसी बीच रेसलमेनिया 31 में दोनों का मैच फाइनल हुआ। उस मुकाबले में उम्मीद के मुताबिक लैसनर ने रोमन रेंस को खूब छकाया। इस मुकाबले में दोनों के बीच कांटे की टक्कर हुई। अंत में दोनों फाइटर्स लहूलुहान थे। व

संक्षिप्त समाचार

उत्तरप्रदेश टी-20

भुवी की लखनऊ फाल्कन्स की नजर टूर्नामेंट की ट्रॉफी पर

बोले- युवाओं के लिए है बड़ा प्लेटफॉर्म

लखनऊ। यूपी टी20 लीग 2026 का आगाज 14 अगस्त से होगा। लखनऊ फाल्कन्स के कप्तान भुवनेश्वर कुमार ने लीग को युवा खिलाड़ियों के लिए बड़ा प्लेटफॉर्म बताया। उन्होंने टीम की तैयारियों और इस बार ट्रॉफी जीतने की उम्मीद भी जताई। युवा खिलाड़ी आराध्य यादव ने भी सीनियर खिलाड़ियों के साथ ड्रेसिंग रूम साझा करने को अपने करियर के लिए अहम बताया। यूपी टी20 लीग की शुरुआत 14 अगस्त 2026 से होगी। टूर्नामेंट के मुकाबले दो शहरों लखनऊ और कानपुर में खेले जाएंगे। टूर्नामेंट से पहले लखनऊ फाल्कन्स के कप्तान भुवनेश्वर कुमार ने मीडिया से बातचीत की। (फोटो सोर्स– विशेष व्यवस्था) यूपी टी20 लीग का नया सीजन 14 अगस्त से शुरू होना है। इस बार लीग के मुकाबले दो वेन्यू लखनऊ के इकाना क्रिकेट स्टेडियम और कानपुर के ग्रीनपार्क स्टेडियम में खेले जाएंगे। टूर्नामेंट के आगाज से पहले भारतीय टीम के अनुभवी तेज गेंदबाज भुवनेश्वर कुमार और युवा खिलाड़ी आराध्य यादव ने लीग के महत्व और अपनी टीम 'लखनऊ फाल्कन्स' की तैयारियों पर विस्तार से चर्चा की।

यूपी टी20 लीग युवा खिलाड़ियों के लिए बेहतरीन अवसर– लखनऊ फाल्कन्स के कप्तान भुवनेश्वर कुमार ने यूपी टी20 लीग को युवा प्रतिभाओं के लिए एक बड़ा प्लेटफॉर्म बताया। भुवनेश्वर कुमार ने कहा, ''यूपी टी20 लीग युवा खिलाड़ियों के लिए बेहद शानदार अवसर है। लीग में कई इंटरनेशनल खिलाड़ी खेल रहे हैं। युवा खिलाड़ियों को उनके साथ ड्रेसिंग रूम शेयर करने का मौका मिलता है'' भुवनेश्वर कुमार ने कहा, ''खिलाड़ी अपनी योग्यता और प्रदर्शन के दम पर आगे बढ़ सकते हैं।

वैभव अर्धशतक से चूके, सार्थक रंजन ने लगाई हाफसेंचुरी

नॉर्थ दिल्ली स्ट्राइकर्स ने न्यू दिल्ली टाइगर्स को हराया

नई दिल्ली। दिल्ली प्रीमियर लीग 2026 के 18वें मैच में सार्थक रंजन की कप्तानी वाली नॉर्थ दिल्ली स्ट्राइकर्स ने न्यू दिल्ली टाइगर्स को 7 विकेट से हरा दिया। ये नॉर्थ दिल्ली स्ट्राइकर्स की इस लीग में चौथे मैच में दूसरी जीत रही और इस टीम के फिलहाल 5 अंक हो चुके हैं। सार्थक रंजन को उनकी शानदार पारी के लिए प्लेयर ऑफ द मैच भी चुना गया और वो इस सीजन में काफी अच्छा प्रदर्शन भी कर रहे हैं। नॉर्थ दिल्ली स्ट्राइकर्स और न्यू दिल्ली टाइगर्स

के बीच खेले गए मैच में नॉर्थ दिल्ली स्ट्राइकर्स ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया और इसके बाद न्यू दिल्ली टाइगर्स ने 20 ओवर में 8 विकेट पर 161 रन बनाए। नॉर्थ दिल्ली स्ट्राइकर्स को जीत के लिए 162 रन का टारगेट मिला था और इस टीम ने 19.1 ओवर में 3 विकेट पर 165 रन बनाकर मैच को जीत लिया।

वैभव अर्धशतक से चूके, सार्थक ने लगाई हाफ सेंचुरी– नॉर्थ दिल्ली स्ट्राइकर्स के लिए पारी की शुरुआत करने वैभव कांडपाल और कप्तान सार्थक रंजन मैदान पर उतरे। दोनों के बीच पहले विकेट के लिए 70 गेंदों पर 102 रन की शतकीय साझेदारी हुई, लेकिन वैभव 36 गेंदों पर 41 रन बनाकर आउट हो गए और ये साझेदारी टूट गई। वैभव ने अपनी पारी के दौरान 2 छक्के और 3 चौके भी लगाए और वो अपने अर्धशतक के करीब आकर उससे चूक गए।

अलेक्जेंड्रोवा ने सबालेंका को हराकर किया बड़ा उलटफेर

नई दिल्ली। कनाडा ओपन में बड़ा उलटफेर देखने को मिला है। रूस की 19वीं रैंकिंग वाली खिलाड़ी एकातेरिना अलेक्जेंड्रोवा ने दुनिया की नंबर एक खिलाड़ी और चार बार की ग्रैंड स्लैम चैंपियन आर्यना सबालेंका को तीन सेट तक चले रोमांचक मुकाबले में 7-6(3), 4-6, 6-4 से हराकर क्वार्टर फाइनल में जगह बना ली। यह मुकाबला दो घंटे 29 मिनट तक चला। अलेक्जेंड्रोवा की दुनिया की नंबर एक खिलाड़ी के खिलाफ यह तीसरी जीत है। इससे पहले वह मियामी 2024 में इगा स्वियातेक और दोहा 2025 में सबालेंका को हरा चुकी हैं।

अंतिम-16 के इस मुकाबले में दोनों खिलाड़ियों के बीच कड़ी टक्कर देखने को मिली। पहले सेट में अलेक्जेंड्रोवा और सबालेंका ने एक-दूसरे की सर्विस तीन-तीन बार तोड़ी। इसके बाद अलेक्जेंड्रोवा ने टाई-ब्रेकर में 7-3 से जीत दर्ज करते हुए पहला सेट अपने नाम किया। सबालेंका ने दूसरे सेट में वापसी की। उन्होंने सेट में मिले एकमात्र ब्रेक प्वाइंट का फायदा उठाया और 6-4 से सेट जीतकर मुकाबला बराबरी पर ला दिया।

तीसरे सेट में भी दोनों खिलाड़ियों के बीच कांटे की टक्कर जारी रही। दोनों ने कई मौकों पर एक-दूसरे की सर्विस तोड़ी। हालांकि, निर्णायक पलों में अलेक्जेंड्रोवा ने धैर्य बनाए रखा और सबालेंका को 5-4 के स्कोर पर मैच में बने रहने के लिए सर्विस करनी पड़ी। सबालेंका ने दो ब्रेक प्वाइंट और मैच प्वाइंट बचाए, लेकिन तीसरे मैच प्वाइंट पर अलेक्जेंड्रोवा ने मुकाबला अपने नाम कर लिया। उन्होंने 7-6(3), 4-6, 6-4 से जीत दर्ज की। यह अलेक्जेंड्रोवा का छठा डब्ल्यूटीए 1000 क्वार्टर फाइनल होगा। दोहा 2025 के बाद वह पहली बार इस स्तर तक पहुंची हैं।

घुटने की चोट के कारण सिनर टूर्नामेंट से बाहर

नई दिल्ली। मौजूदा विंबलडन चैंपियन और पांच बार के ग्रैंड स्लैम विजेता यानिक सिनर दाहिने घुटने की चोट के कारण सिनसिनाटी ओपन से हट गए हैं। टूर्नामेंट के आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल ने रविवार को इसकी पुष्टि की। सिनर के बाहर होने के साथ ही टूर्नामेंट में टेनिस जगत के दो युवा सुपरस्टार सिनर और उनके चिर प्रतिद्वंद्वी कार्लोस अल्काराज नजर नहीं आएंगे। टूर्नामेंट के आधिकारिक हैंडल ने पोस्ट किया, 'यानिक सिनर दाहिने घुटने की चोट के कारण सिनसिनाटी ओपन से हट गए हैं। हमारे 2024 चैंपियन को शुभकामनाएं और अगले साल आपको फिर देखने का इंतजार रहेगा।'

सिनर ने 2024 में सिनसिनाटी ओपन का खिताब अपने नाम किया था। फाइनल में उन्होंने फ्रांसिस टियाफो को 7-6 (7-4), 6-2 से हराकर ट्रॉफी जीती थी। सिनर के हटने से टूर्नामेंट को बड़ा झटका लगा है। सिनसिनाटी ओपन का आयोजन 13 से 23 अगस्त तक होना है, जबकि सत्र का आखिरी ग्रैंड स्लैम यूएस ओपन 30 अगस्त से 13 सितंबर तक खेला जाएगा।सिनर से पहले उनके चिर प्रतिद्वंद्वी कार्लोस अल्काराज भी सिनसिनाटी ओपन से हट चुके हैं। सात बार के ग्रैंड स्लैम चैंपियन अल्काराज इस टूर्नामेंट में अपने पिछले साल के खिताब का बचाव नहीं कर पाएंगे। अल्काराज अप्रैल में बार्सिलोना ओपन के दौरान कलाई में चोट लगने के बाद से प्रतिस्पर्धी टेनिस से दूर हैं। चोट के कारण उन्हें फ्रेंच ओपन और विंबलडन से भी बाहर रहना पड़ा था।23 वर्षीय अल्काराज की नजर अब यूएस ओपन में वापसी पर है। इस साल का यूएस ओपन 30 अगस्त से शुरू होगा और अल्काराज मौजूदा चैंपियन के रूप में इसमें उतरेंगे। हाल के हफ्तों में स्पेनिश खिलाड़ी ने अपनी फिटनेस में धीरे-धीरे सुधार किया है। उन्होंने पहले स्ट्रेंथ और कंडीशनिंग पर काम किया और इसके बाद सिनसिनाटी में फुल ट्रेनिंग सेशन शुरू किए थे। हालांकि, सिनर के घुटने की चोट और अल्काराज की कलाई की चोट ने सिनसिनाटी ओपन में स्टार पावर को काफी कम कर दिया है। अब दोनों खिलाड़ियों की नजर आगामी यूएस ओपन में पूरी फिटनेस के साथ वापसी करने पर होगी।

अशिमता ने जीता कोरिया मास्टर्स

बैडमिंटन फाइनल में चीन की खिलाड़ी को हराया ; एक हफ्ते में भारत का दूसरा BWF खिताब

नई दिल्ली। भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी अशिमता चालिहा ने रविवार को कोरिया मास्टर्स सुपर 300 महिला सिंगल्स का खिताब जीता। 26 साल की अशिमता ने 53 मिनट चले फाइनल में चीन की चौथी सीड हान कियान शी को हराया। उन्होंने 14–21, 21–14, 21–14 से जीत दर्ज कर अपना पहला BWF वर्ल्ड टूर खिताब जीता। भारत ने लगातार दूसरा BWF वर्ल्ड टूर फाइनल का खिताब अपने नाम किया। इससे पहले तन्वी शर्मा ने 2 अगस्त को ताइपे ओपन जीता था।

पहले गेम में हान ने बनाई बढ़त

अशिमता ने मैच की शुरुआत में 3–0 की बढ़त बनाई। वे शुरुआती दौर में 9–5 से आगे थीं। इसके बाद हान ने वापसी की और दोनों खिलाड़ी 11–11 की बराबरी पर पहुंच गईं। चीनी खिलाड़ी ने लगातार अंक जुटाकर खेल पर कंट्रोल बनाया। हान ने पहला गेम जीतकर बढ़त हासिल की।

दूसरे गेम में अशिमता की वापसी

अशिमता ने दूसरे गेम में आक्रामक खेल दिखाया। उन्होंने स्मैश से हान पर दबाव बनाया और तेज डिफेंसिव रिटर्न से 6–6 के बाद बढ़त बना ली। ब्रेक के समय अशिमता 11–8 से आगे थीं। इसके बाद भी उन्होंने रैलियों पर नियंत्रण बनाए रखा। हान अंतर कम नहीं कर सकीं और अशिमता 17–10 से आगे हो गईं। भारतीय खिलाड़ी ने एक और तेज अटैकिंग शॉट के साथ गेम 21–14 से जीतकर मुकाबला बराबर कर दिया।

142 रन की पारी पर सितांशु कोटक ने कही बड़ी बात

क्या नंबर-3 पर जगह पक्की कर पाएंगे देवदत्त पडिक्कल !

कोलंबो, एजेंसी। भारतीय टीम के बल्लेबाजी कोच सितांशु कोटक ने बाएं हाथ के शीर्ष क्रम के बल्लेबाज देवदत्त पडिक्कल की जमकर तारीफ की है। श्रीलंका क्रिकेट इलेवन के खिलाफ तीन दिवसीय अभ्यास मैच में नाबाद 142 रन की शानदार पारी खेलने वाले पडिक्कल की बल्लेबाजी को कोटक ने बहुत अच्छी बताया। पडिक्कल ने अपनी पारी में 18 चौके लगाए और भारत की छह विकेट से जीत में अहम भूमिका निभाई। उनकी इस पारी से टेस्ट टीम में नंबर-3 की जगह को लेकर भारत की चिंता कुछ कम हुई है। दरअसल, इस स्थान के प्रमुख दावेदार बी साई सुदर्शन पैर के अंगूठे की चोट से उबर रहे हैं और श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट सीरीज से बाहर हो गए हैं।

पडिक्कल ने शानदार बल्लेबाजी की: कोटक

कोटक ने बीसीसीआई टीवी से बातचीत में कहा, 'मुझे लगता है कि देवदत्त ने बहुत अच्छी बल्लेबाजी की। मेरे लिए देवदत्त की पारी वास्तव में बहुत अच्छी थी।' भारत ने अभ्यास मैच के तीसरे दिन अंतिम सत्र में 207 रन के लक्ष्य को चार विकेट खोकर हासिल कर लिया। यह मुकाबला 15 अगस्त से गॉल में शुरू होने वाली टेस्ट सीरीज से पहले भारतीय टीम के लिए अहम तैयारी का हिस्सा था।

नेट प्रैक्टिस से ज्यादा उपयोगी रहा अभ्यास मैच

कोटक ने कहा कि चार दिन नेट्स में अभ्यास करने के मुकाबले अभ्यास मैच में खेलने से टीम को ज्यादा फायदा मिला। उन्होंने कहा कि गेंदबाजों ने अच्छी तीव्रता के साथ गेंदबाजी की और सभी खिलाड़ियों को पर्याप्त मैच अभ्यास मिला। उन्होंने कहा, 'यह बहुत अच्छा और उपयोगी रहा, क्योंकि चार दिन और नेट्स में अभ्यास करना अभ्यास मैच खेलने जितना उपयोगी नहीं होता। गेंदबाजों ने अच्छी तीव्रता के साथ गेंदबाजी की। हमने सभी को आजमाया और गेंदबाजों को भी बल्लेबाजी का मौका मिला।'

गेंदबाजों को भी मिला पर्याप्त कार्यभार

कोटक के मुताबिक, आकिब नबी को छोड़कर, जिन्होंने पांच ओवर गेंदबाजी की, बाकी विशेषज्ञ गेंदबाजों ने मुकाबले में करीब 18 से 20 ओवर गेंदबाजी की। वहीं, नबी और प्रसिद्ध कृष्णा को छोड़कर बाकी गेंदबाजों को बल्लेबाजी का भी मौका मिला। उन्होंने सपाट पिच पर भारतीय तेज गेंदबाजों के प्रयास की भी सराहना की। इसके अलावा मोहम्मद सिराज और गुरनूर बरार के निचले क्रम में लगाए गए छक्कों को भी उन्होंने सकारात्मक पहलू बताया।

टीम से जुड़े सरफराज

साई सुदर्शन के रिप्लेसमेंट के तौर पर टीम में शामिल किए गए दाएं हाथ के बल्लेबाज सरफराज खान सोमवार को भारतीय टीम के अभ्यास सत्र से जुड़ गए। टीम ने एनसीसी ग्राउंड पर अभ्यास किया, जहां सभी बल्लेबाज मौजूद रहे। तेज गेंदबाजों में केवल औकिब नबी अभ्यास सत्र में पहुंचे। भारत और श्रीलंका के बीच टेस्ट सीरीज की शुरुआत 15 अगस्त से गॉल में होगी।

सिराज ने तीन छक्के लगाकर भारत को जिताया

वॉर्मअप में श्रीलंका को 6 विकेट से हराया; चोट से रिकवर हुए गिल के 44 रन

नई दिल्ली। भारत ने टेस्ट सीरीज से पहले वॉर्मअप मैच में श्रीलंका-11 को 6 विकेट से हरा दिया। मोहम्मद सिराज ने आखिरी ओवर में लगातार तीन छक्के लगाकर टीम इंडिया को जीत दिलाई। रविवार को मैच के आखिरी दिन भारत को जीत के लिए 16 रन चाहिए थे।

ऐसे में सिराज ने केशरा नुवंथा की शुरुआती तीन बॉल पर लगातार तीन छक्के लगाए। उंगली की चोट से लौट रहे कप्तान शुभमन गिल ने 44 रन की पारी खेली। उन्होंने यशस्वी जायसवाल के साथ 105 रन की साझेदारी की। कोलंबो में भारत को 207 रन का टारगेट मिला था। उसने दिन का खेल शुरु होने से पहले ही पहली पारी 357/6 के स्कोर पर घोषित की। श्रीलंका XI ने अपनी दूसरी पारी 200/6 के स्कोर पर घोषित की। श्रीलंका-XI ने पहली पारी में 363/8 का स्कोर बनाया था।

नेट सेशन के दौरान गिल को चोट लगी थी– वॉर्मअप मैच शुरू होने से एक दिन पहले गुरुवार को ट्रेनिंग के दौरान गिल की उंगली में चोट लगी थी। वे मैच के पहले दो दिन मैदान पर नहीं उतरे थे। उनकी गैरमौजूदगी में चरुराहुल ने कप्तानी की।

जडेजा और बरार ने 2-2 विकेट लिए – श्रीलंका-ढ्ढढ्ढ की दूसरी पारी में निशान फर्नांडो ने 63 रन बनाए, जबकि निपुन धनंजया ने 46 और अंजला बंडारा ने 35 रन का योगदान दिया। रमेश मेंडिस 16 रन बनाकर नाबाद रहे। भारत की ओर से रवींद्र जडेजा और गुरनूर बरार ने 2-2 विकेट लिए, जबकि मोहम्मद सिराज और प्रसिद्ध कृष्णा को एक-एक विकेट मिला।

पडिक्कल ने नाबाद 142 रन बनाए – भारत ने पहली पारी में 90 ओवर में 6 विकेट पर 357 रन बनाकर पारी घोषित की। देवदत्त पडिक्कल ने 142 रन की नाबाद पारी खेली। रवींद्र जडेजा ने 63, केएल राहुल ने 40, मानव सुथार ने 41 और गुरनूर बरार ने नाबाद 36 रन बनाए। श्रीलंका-ढ्ढढ्ढ की ओर से रमेश मेंडिस और असंका मनोज ने 2-2 विकेट लिए, जबकि विश्वा फर्नांडो और केशारा नुवान्था को एक-एक सफलता मिली।

'किल' डायरेक्टर निखिल नागेश भट्ट का हॉलीवुड डेब्यू, जेमी फॉक्स के साथ बनाएंगे एक्शन थ्रिलर

डायरेक्टर निखिल नागेश भट्ट 'डेडलॉवड' नाम की एक एक्शन थ्रिलर फिल्म डायरेक्ट करेंगे, जिसमें ऑस्कर विजेता एक्टर जेमी फॉक्स लीड रोल में नजर आएंगे। इस फिल्म को अमेजन एमजीएम स्टूडियोज दुनिया भर में रिलीज करेगा।

क्या होगी फिल्म की कहानी?

डेडलाइन की रिपोर्ट्स के मुताबिक, 'डेडलॉवड' को प्राइम वीडियो पर ग्लोबली स्ट्रीम किया जाएगा। यह निखिल भट्ट की पहली इंग्लिश लैंग्वेज फिल्म होगी और 'किल' की सफलता के बाद उनके करियर में एक बड़ा कदम माना जा रहा है। फिल्म की कहानी एक ऐसे पूर्व मरीन पर आधारित है, जो एक बड़े केस में ज्यूरी ड्यूटी कर रहा होता है। इसी दौरान कोर्ट में अचानक खतरनाक हालात बन जाते हैं और मामला बंधक बनाने तक पहुंच जाता है। दरअसल, आरोपी की बेटी अपने पिता को बचाने के लिए कोर्ट पर कब्जा कर लेती है, जिसके बाद कहानी में जबरदस्त ट्विस्ट आता है।

इस फिल्म को एरिक स्कॉट एंडरसन और मैट ताकेजिरो बोसैक ने लिखा है। प्रोडक्शन की जिम्मेदारी ब्रायन कवार्नो-जोंस, फ्रेड बर्जर, डेव कैपलान और खुद जेमी फॉक्स की टीम संभाल रही है। जेमी फॉक्स हाल ही में नेटफ्लिक्स की फिल्म 'बैक इन एक्शन' में नजर आए थे, जिसमें उनके साथ कैमरून डियाज थीं। वह जल्द ही 'फाइट फॉर '84' नाम की एक और फिल्म में दिखाई देंगे।

निखिल नागेश भट्ट के बारे में

निखिल नागेश भट्ट को इंटरनेशनल पहचान उनकी फिल्म 'किल' से मिली, जिसका प्रीमियर टोरंटो इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में हुआ था। बाद में इस फिल्म को लायंसगेट ने खरीदा और 2024 में इसे बड़े स्तर पर रिलीज किया गया। लक्ष्य और राघव जुयाल स्टारर 'किल' को भारत की सबसे हिंसक फिल्मों में से एक माना गया। 'किल' के अलावा निखिल 'अपूर्वा', 'हुरदंग' जैसी फिल्में और 'रस भरी', 'द गॉन गेम' जैसी वेब सीरीज भी डायरेक्ट कर चुके हैं। खबरें यह भी थीं कि वह सनी देओल के साथ 'परशुराम' नाम की फिल्म पर काम कर रहे हैं, लेकिन 'डेडलॉवड' के ऐलान के बाद इस प्रोजेक्ट का क्या होगा, यह साफ नहीं है।

मुझे उल्लू बनाया गया

'धमाल 4' में कॉमेडी के नाम पर करवा लिया एक्शन

'धमाल 4' में अजय देवगन, रितेश देशमुख, अरशद वारसी और जावेद जाफरी जैसे सितारे फिर नजर आए। साथ ही इस बार कुछ नए चेहरे भी जुड़े, जिनमें एक्ट्रेस संजीदा शेख भी शामिल थीं। फिल्म में संजीदा ने एक्शन और कॉमेडी दोनों किया। हिंदुस्तान टाइम्स से बातचीत में उन्होंने बताया कि उन्हें यह रोल कैसे मिला और शूटिंग का अनुभव कैसा रहा।

'सीरियस एक्ट्रेस' टैग पर बोलीं संजीदा

'धमाल 4' से पहले संजीदा ने कॉमेडी में ज्यादा काम नहीं किया था। इससे पहले वह संजय लीला भंसाली की सीरियस पीरियड ड्रामा 'हीरामंडी' में नजर आई थीं। इसके बाद उन्हें 'सीरियस एक्ट्रेस' का टैग मिलने लगा। संजीदा ने कहा, 'मुझे 'धमाल 4' इसलिए मिली क्योंकि इंद्र सर ने मुझे 'हीरामंडी' देखने के बाद बुलाया। उनका पहला सवाल था, 'आप तो बहुत सीरियस एक्ट्रेस हैं,' क्योंकि हीरामंडी काफी सीरियस थी।' संजीदा ने बताया कि उन्होंने डायरेक्टर से कहा कि उन्हें मौका दिया जाए ताकि वह दिखा सकें कि वह कितनी फनी हैं। 'मैं उनके साथ बैठी और उन्होंने मुझे हंसते हुए सुना- मैं थोड़ा अलग तरीके से हंसती हूं तो उन्होंने कहा, 'ठीक है।' और मेरी कास्टिंग हो गई।'

कॉमेडी के साथ किया एक्शन

'धमाल 4' में संजीदा का किरदार जितनी कॉमेडी करता है, उतना ही एक्शन भी करता है। कई सीन में वह बड़े एक्शन स्टार्स के साथ एक्शन करती नजर आईं। उन्होंने मजाकिया अंदाज में कहा, 'मेरे हर सीन में एक्शन था। मुझे उल्लू बनाया गया। मुझे कहा गया था कि कॉमेडी करनी है, लेकिन मुझसे एक्शन करवा लिया गया।' संजीदा ने बताया कि सेट पर यह बात मजाक बन गई थी कि जहां अजय देवगन जैसे बड़े एक्शन स्टार मौजूद हैं, वहां उनसे एक्शन सीन करवाए जा रहे थे। उन्होंने कहा, 'मैं सच बोल रही हूं, अजय देवगन सेट पर थे और मुझसे सारे एक्शन सीन कराए जा रहे थे। यह सेट पर मजाक बन गया था।'

'लॉकअप 2' से बाहर आने के बाद परिवार के बारे में बोलीं आकांक्षा चमोला

शो 'लॉकअप 2' में आते ही आकांक्षा चमोला ने बताया कि वह टीवी अभिनेता गौरव खन्ना से तलाक ले रही हैं। आगे चलकर उन्होंने कहा कि वह लड़कियों के प्रति भी आकर्षित रहती हैं। अभिनेत्री का यह राज सामने आने पर हंगामा खड़ा हो गया। इसी बारे में हाल ही में 'लॉकअप 2' से बाहर आने के बाद आकांक्षा चमोला ने बात की। उन्होंने बताया कि परिवार उनसे काफी नाराज है। जब शो 'लॉकअप 2' से आकांक्षा चमोला बाहर हुई थीं तो उनसे अभिनेत्री तेजस्वी प्रकाश ने सवाल-जवाब किए थे। यह शो का ही कॉन्सेप्ट था, जिसमें तेजस्वी प्रतियोगी से कई सवाल पूछती हैं। तेजस्वी से बातचीत के दौरान ही आकांक्षा ने कहा, 'जब गौरव खन्ना शो में आए थे तो उन्होंने परिवार के बारे में कुछ ऐसा बताया था जो कि परेशान होने वाली बात थी। तलाक की बात तो परिवार को पता थी। लेकिन लड़कियों की तरफ आकर्षित होने वाली बात को लेकर वे ओके नहीं हैं।'

इन दिनों क्या कर रही हैं 'टॉक्सिक' अभिनेत्री रुक्मिणी वसंत

साउथ की चर्चित अभिनेत्री रुक्मिणी वसंत इन दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म 'टॉक्सिक' को लेकर चर्चा में हैं। बीते कल इसका ट्रेलर रिलीज हुआ है। ट्रेलर ने दर्शकों का ध्यान खींचा है। इस बीच अभिनेत्री ने सोशल मीडिया पर अपनी शानदार तस्वीरें शेयर की हैं।

तस्वीरों में देखा जा सकता है कि उन्होंने क्रीम रंग के ऑफ शोल्डर गाउन में तस्वीरें शेयर की हैं। एक तस्वीर में वह आसमान देख रही हैं। उन्होंने बहुत हल्की सिल्वर कलर की ज्वैलरी पहनी है। उन्होंने अपने बालों को खुला छोड़ा है। उनके इस स्टाइल के पीछे आस्था शर्मा और मुस्कान मुंद्रा का हाथ है। तस्वीरें शेयर करते हुए अभिनेत्री ने कैप्शन में लिखा ' 'टॉक्सिक- ए फेयरी टेल फॉर ग्रोन अप्स' के लिए अपने हिस्से की शूटिंग कर रही हूं।' तस्वीरों पर फैंस ने कमेंट किए हैं। एक यूजर ने उन्होंने सबसे प्यारी गुड़िया कहा है। वहीं एक दूसरे यूजर ने उन्हें सुंदरी कहा है।

क्या है रुक्मिणी का किरदार?

आपको बता दें कि रुक्मिणी वसंत 'टॉक्सिक' में मेलिसा का किरदार निभा रही हैं। कल रिलीज हुए फिल्म के ट्रेलर में अभिनेत्री के अलावा कियारा आडवाणी, हुमा कुरैशी, नयनतारा, तारा सुतारिया और यश की झलक दिखी है। ट्रेलर काफी हिंसक है।

फिल्म की स्टारकास्ट

फिल्म में यश लीड रोल में नजर आएंगे, जो राया का किरदार निभा रहे हैं। कियारा 'नादिया' का किरदार निभा रही हैं। वहीं तारा सुतारिया 'रबेका' और हुमा कुरैशी 'एलिजाबेथ' के किरदार में नजर आएंगी। इनके अलावा नयनतारा, रुक्मिणी वसंत समेत और भी कलाकार फिल्म में नजर आएंगे।

'माइकल' के बाद जाफर जैक्सन को मिला बड़ा प्रोजेक्ट, विल स्मिथ के साथ करेंगे काम

एक्टर जाफर जैक्सन ने अपने दिवंगत अंकल पॉपस्टार माइकल जैक्सन का किरदार उनकी बायोपिक में निभाया था। फिल्म में उनके अभिनय के लिए काफी सराहना मिली थी। एक्टर अब जल्द ही एक्शन थ्रिलर 'सुपरमैक्स' में नजर आएंगे।

विल स्मिथ संग नजर आएंगे जाफर

फिल्म 'माइकल' के बाद जाफर जैक्सन के लिए यह दूसरा बड़ा प्रोजेक्ट है। रिपोर्ट्स के मुताबिक अमेजन एमजीएम और मिरामैक्स की फिल्म 'सुपरमैक्स' में वह अभिनय करेंगे। हालांकि उनके किरदार की जानकारी फैंस को अब तक नहीं दी गई है। मगर वह फिल्म में एक महत्वपूर्ण किरदार निभा सकते हैं।

एफबीआई एजेंट्स पर आधारित कहानी

रिपोर्ट्स के मुताबिक फिल्म में जबरदस्त एक्शन देखने को मिलेगा। कहानी दे एफबीआई एजेंट्स और उनकी जांच पर आधारित बताई जा रही है। जो एक उच्च सुरक्षा वाली जेल के अंदर एक असंभव सी लगने वाली हत्या की जांच करते हैं। यह दोनों किरदार विल स्मिथ और एना सोफिया रॉब निभाएंगे। फिल्म का निर्देशन डेविड ग्रीन कर रहे हैं। वहीं फिल्म का निर्माण अमेजन एमजीएम स्टूडियो और मिरामैक्स मिल कर करेंगे।

'माइकल' से मशहूर हुए जाफर जैक्सन

एक्टर जाफर जैक्सन फिल्म 'माइकल' के बाद दुनियाभर में पहचाने जाने लगे हैं। फिल्म दिवंगत पॉपस्टार माइकल जैक्सन के जीवन पर आधारित है। उनके जीवन के उतार-चढ़ावों को फिल्म में बखूबी से दिखाया गया है। फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर तगड़ी कमाई की थी। फिल्म का वर्ल्डवाइड कलेक्शन एक बिलियन डॉलर से भी ऊपर का था। वहीं इस फिल्म ने भारतीय सिनेमाघरों पर भी काफी अच्छा प्रदर्शन किया था। भारत में फिल्म का नेट कलेक्शन 71.09 करोड़ रहा।

कम उम्र में शोहरत, फिर विवादों ने घेरा... ऐसी रही हंसिका मोटवानी की फिल्मी और निजी जिंदगी

हंसिका मोटवानी की कहानी किसी फिल्मी स्क्रिप्ट से कम नहीं है। बचपन में टीवी की दुनिया में कदम रखा, चाइल्ड आर्टिस्ट के तौर पर पहचान बनाई, बॉलीवुड में बड़े सितारों के साथ काम किया और फिर साउथ फिल्म इंडस्ट्री में बतौर लीड एक्ट्रेस अलग जगह बना ली। लेकिन, जितनी तारीफ हंसिका के काम की होती है, उससे ज्यादा चर्चे उनकी निजी जिंदगी को लेकर होते हैं। वह किसी न किसी चीज को लेकर अक्सर सुर्खियों में बनी रहती हैं।

मुंबई में जन्मीं हंसिका ने बहुत छोटी उम्र में ही कैमरे का सामना करना शुरू कर दिया था। टीवी के मशहूर शो 'शाका लाका बूम बूम' में बतौर चाइल्ड आर्टिस्ट नजर आने के बाद वह घर-घर में पहचानी जाने लगीं। इसके बाद उन्होंने 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' जैसे लोकप्रिय सीरियल में भी काम किया। हंसिका की अगली बड़ी छलांग बॉलीवुड में हुई। ऋतिक रोशन और प्रीति जिंटा की फिल्म 'कोई मिल गया' में उनकी मौजूदगी को दर्शकों ने पसंद किया। कुछ समय बाद हंसिका ने साउथ सिनेमा का रुख किया। उन्होंने तेलुगु फिल्म 'देसमुदुरु' से बतौर लीड एक्ट्रेस डेब्यू किया। उस समय उनकी उम्र काफी कम थी, लेकिन फिल्म में उनकी एक्टिंग को पसंद किया गया और उन्हें बेस्ट फीमेल डेब्यू का सम्मान भी मिला। इसके बाद तमिल फिल्मों में भी उनका करियर तेजी से आगे बढ़ा। 'एंगेयुम काधल' और 'ओरु कल ओरु कन्नाड़ी' जैसी फिल्मों ने उन्हें दक्षिण भारतीय दर्शकों के बीच मजबूत पहचान दिलाई। तमिल, तेलुगु, कन्नड़, हिंदी और मलयालम फिल्मों में काम करके उन्होंने अपनी बहुभाषी पहचान बनाई। एक चुलबुली और मासूम लड़की के किरदारों से शुरुआत करने वाली हंसिका ने धीरे-धीरे अलग तरह के रोल भी किए।

हंसिका का करियर जितना तेजी से आगे बढ़ा, उनकी निजी जिंदगी को लेकर चर्चाएं भी उतनी ही तेज होती गईं। एक समय उनकी बदली हुई शारीरिक बनावट को लेकर तरह-तरह की बातें कही गईं और उन पर हार्मोनल इंजेक्शन लेने के आरोप लगे। हंसिका ने इन आरोपों को खारिज किया था। इसके अलावा, एक कथित एमएमएस के वायरल होने के बाद भी उनका नाम चर्चा में आया। हालांकि, हंसिका ने साफ किया था कि वीडियो में दिखाई देने वाली लड़की वह नहीं थी। बावजूद इसके, इस विवाद ने काफी समय तक उनका पीछा नहीं छोड़ा। हंसिका की निजी जिंदगी का सबसे ज्यादा चर्चित अध्याय उनकी शादी रही। उन्होंने 4 दिसंबर 2022 को बिजनेसमैन सोहेल कथूरिया से शादी की। राजस्थान के जयपुर में हुई इस शाही शादी की तस्वीरों और वीडियो ने खूब सुर्खियां बटोरीं। उनकी शादी पर 'हंसिका लव शादी ड्रामा' नाम की एक वेब सीरीज भी बनी है। हालांकि शादी की घोषणा के साथ ही विवाद शुरू हो गया। सोहेल की यह दूसरी शादी थी और उनकी पहली पत्नी रिंकी बजाज हंसिका की दोस्त थीं। इसी वजह से सोशल मीडिया पर हंसिका पर कई तरह के आरोप लगाए गए। हंसिका ने इन आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि सोहेल और रिंकी के रिश्ते में क्या हुआ, इससे उनका कोई लेना-देना नहीं था। हालांकि, हंसिका और सोहेल का रिश्ता भी ज्यादा समय चल नहीं पाया। दोनों ने तलाक ले लिया है।

साप्ताहिक जलसा
स्वयंसिद्धा

स्वस्थ समाज के लिए नासूर बन जाएगा लिव इन रिलेशनशिप

छत्तीसगढ़ की अग्रणी महिला संस्था स्वयंसिद्धा-ए मिशन विद ए विजन द्वारा गत 7 वर्षों से प्रत्येक सप्ताह संगीत, साहित्य, संस्कृति, स्वास्थ्य, सिनेमा, फोटोग्राफी, कानूनी सलाह आदि समसामयिक विषयों पर नियमित स्तंभ चलाए जाते हैं जिनमें प्रत्येक मंगलवार परिचर्चा का आयोजन किया जाता है। अधिकारियों, जिम्मेदारों, नेताओं, मंत्रियों के विचार तो हम हमेशा सुनते हैं लेकिन आम गृहणियां और माताएं समसामयिक विषयों पर क्या सोचती है इस पर हमने कभी बात नहीं की।

संस्था प्रमुख डॉ. सोनाली चक्रवर्ती ने चर्चा शुरू करते हुए जानकारी दी-"भारत में लिव-इन रिलेशनशिप का प्रचलन मुख्य रूप से 2000 के दशक के बाद (विशेषकर 2006 और 2010 के ऐतिहासिक अदालती फैसलों के बाद) तेजी से बढ़ा है। हालाँकि अदालत ने 1978 में ही इसे वैध माना था, पर सामाजिक और शहरी युवाओं के बीच इसका चलन आधुनिक समय में मुख्य रूप से ऊपर आया है। भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने कई ऐतिहासिक फैसलों में स्पष्ट किया है कि बालिग (18 वर्ष से अधिक आयु) वयस्कों के बीच आपसी सहमति से लिव-इन रिलेशनशिप में रहना कोई अपराध या पाप नहीं है। घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम, 2005 के तहत लिव-इन में रहने वाली महिलाओं को घरेलू हिंसा के खिलाफ कानूनी सुरक्षा और अधिकार भी प्राप्त हैं। हमारे देश में

लिव-इन रिलेशनशिप में रहने पर समाज, परिवार और मानसिक स्तर पर कई तरह की समस्याएं और चुनौतियाँ सामने आती हैं। भारत में इसे कानूनी रूप से वयस्कों के लिए अपराध नहीं माना गया है, फिर भी व्यावहारिक जीवन में कई कठिनाइयाँ आती हैं। भारतीय समाज में आज भी इसे पूरी तरह स्वीकार नहीं किया गया है, जिससे जोड़ों को अक्सर सामाजिक निंदा का सामना करना पड़ता है। परिवार के लोग नाराज हो जाते हैं और कई बार रिश्ता तक तोड़ देते हैं।

रहने की जगह मिलने में भी दिक्कत होती है।मकान मालिक या हाउसिंग सोसाइटीज बिना शादी के रहने वाले जोड़ों को आसानी से किराए पर घर नहीं देती हैं।मानसिक और व्यावहारिक समस्याएं भी सामने आती ही है। साथ रहने पर छोटी-छोटी बातों या भविष्य को लेकर सोच न मिलने से विवाद होने लगते हैं। काम बांटने या जिम्मेदारियां उठाने को लेकर अक्सर मनमुटाव होता है।पैसों के खर्च और बचत के तरीकों को लेकर तनाव पैदा हो सकता कमिटमेंट की कमी इमोशनल इशू बना सकता है।

बिना कानूनी बंधन के होने के कारण कोई भी पार्टनर कभी भी रिश्ता खत्म कर सकता है जिससे दिक्कतें पैदा होती है।यद्यपि सुप्रीम कोर्ट ने कुछ मामलों में घरेलू हिंसा से सुरक्षा दी है, फिर भी विवाह जैसे ठोस कानूनी अधिकार और उत्तराधिकार स्वतः नहीं मिलते।

भोपाल निवासी सुमन रतन कहती हैं-"भारत एक विकासशील लोकतांत्रिक राष्ट्र है जहाँ व्यक्तिगत स्वतंत्रता व मौलिक अधिकार हर नागरिक का संवैधानिक अधिकार है।विवाह व तलाक के नियम धार्मिक परंपरा से जुडे हैं पर कानून के द्वारा संरक्षित हैं। लिव इन रिलेशन का आधुनिक समाज मे फैलता फैशन चिंताजनक विषय है।पुराने समय से अलग अलग राज्यों मे समाजिक परंपराओं में इस प्रकार की व्यवस्था देखने को मिलती है जो उस क्षेत्रीय समाज मे मान्य होती तो हैं पर भारतीय कानून मे उसकी सीमाएं तय हैं।आज की युवा पीढी मे लिव इन रिलेशन के बढते चलन के अनेक कारण हैं जैसे पाश्चात्य देशों का अंधानुकरण।पश्चिमी समाज मे व्यक्तिगत स्वतंत्रता व बराबरी को अत्यधिक महत्व दिया जाता है।दो लोग जब अपने रिश्ते को मित्रता से आगे बढाते हैं तब सोच समझकर साथ रहने का निर्णय लेते हैं।दोनों के खर्चे व काम के बंटवारे बराबर बंटे होते हैं।रिश्ते मे साफगोई व विश्वास पहली शर्त होती है। मतभेद या अनिच्छा की स्थिति मे दोनों पक्ष निर्णय लेते हैं। ब्रेकअप से कोई एक भावनात्मक रुप से व्यथित भी होता होगा परंतु कोई जोर जबर्दस्ती नहीं।।

किंतु हमारे आधुनिक भारतीय युवाओं ने आधा अधूरा ज्ञान प्राप्त किया। साथ मे रहना तो सीख लिया पर पार्टनर की इच्छा व स्वंत्रता का सम्मान करना भूल गए। परेशानी तब होती है जब दोनों मे से एक उससे निकलना चाहे।बदलते आर्थिक, सामाजिक परिवेश के कारण आज का युवा विवाह को बंधन और बहुत सारी जिम्मेदारियों का पर्याय मानने लगा है और उसे आसान विकल्प लिव इन रिलेशनशिप के रूप में नजर आ रहा है।परंतु किसी भी संबंध या रिश्ते को सामाजिक, पारिवारिक स्वीकृति कि आवश्यकता होती है वरना ऐसे रिश्ते अमान्य व अनैतिक ही कहलाए जाते हैं। आशा है आज का युवा वर्ग हर रिश्ते कि गरिमा व उपयोगिता को समझे।भावनात्मक व मानवीय पहलू के प्रति संवेदनशील रहे ।अपने अधिकारों के साथ साथ कर्तव्यों का भी बोध करें तभी भविष्य में एक उन्नति शील समाज और राष्ट्र का सपना साकार होगा।

भिलाई निवासी आरती तिवारी कहती है कि - लिव-" लिव इन रिलेशनशिप की परम्परा हमारे भारतीय समाज के लिए बहुत ही असमाजिक एवम चिंतनीय है जिसमें युवक युवती बगैर विवाह किए एक साथ रहते हैं जिससे एक साथ रहकर एक दूसरे को समझते हुए आगे चलकर विवाह बंधन में ब?धकर वैवाहिक जीवन को अच्छे तरह चलायेंगे परंतु यह अधिकांश मामलों मे मृगतृष्णा की तरह ही होता है। अधिकतर बच्चे सम्बन्ध तोड़कर गलत दिशा की रूख करते हैं।यह बच्चों में संस्कार विहिनता और उचित सामाजिक पारिवारिक परिवेश के अभाव के कारण होता है भारतीय समाज में इसका कोई स्थान नही है।

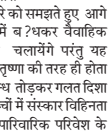

भिलाई निवासी श्रीमती कमलेश आर्या एक पुरानी घटना का जिक्र करती है, जिसमें लड़की का कत्ल लड़का कर देता है,यह लिव इन रिलेशनशिप की सबसे घिनौनी और निर्मम हत्या मानी जाती है। इस पर चंद लाइन इस प्रकार हैं।

एक लड़की जब प्यार में, पड़ जाती है, तब वापस कहां आती है। वह हर संभव कोशिश करती है, अपने प्यार को बचाने की, फिर चाहे फना हो जाती है। पता था उसको मार डालेगा, वह मरने से कहां घबराती है, दोस्तों से मदद मांगी, पुलिस तक पहुंच गई ,फिर भी कहां बच पाई, अलग-अलग थैलियों में ,35 टुकड़ों में बंट जाती है। एक लड़की जब प्यार में पड़ जाती है, तब वापस कहां आ पाती है। इस घटना में सबक है कि प्यार करो तो सोच समझ कर करो, या इतना आगे मत बढ़ो की वापस ना आ पाएं।

यह उम्र ही ऐसी होती है, जो जोखिमों से नहीं घबराती ।यहीं बड़ों के मार्गदर्शन की उनके प्यार और सहयोग की बच्चों को जरूरत पड़ती है, जिससे वह अपने दिल की बात उनसे कह सकें, सरकार की ओर से लिव इन रिलेशनशिप को मंजूरी मिलने पर बच्चों के हौंसले और बढ़ जाते हैं, जिसको कठोर और स्पष्ट करना बहुत जरूरी है। वरना समाज की नींव ही हिल जाएगी और हमारी गौरवमई विवाह व्यवस्था चरमरा जाएगी।

भिलाई निवासी शिक्षिका कुदसिया अली कहती है-"आजकल के युवाओं में लिव इन का जो चलन है चिंताजनक है। ये सिर्फ जरूरत के लिए किसी के भी साथ लिव इन में रहना शुरू कर देते है। आपने सुना होगा रूम शेयरिंग का चलन , जिसमें 2 या 3 लड़के या 2 या 3 लड़कियां एक साथ रहती है किराया और दीगर खर्चा शेयर करके अपने ऊपर भार कम करने। किंतु ये लिव इन में 1 लड़का और 1 लड़की साथ रहना शुरू कर देते है फिर जाने कब एक दूसरे के इमोशनल पार्टनर बनते है। मुझे लगता है इसमें उनको अच्छा इसलिए लगता है क्यों कि कोई बंधन में बंधे नहीं है।

नहीं जमा तो छोड़ के नया पार्टनर ढूंढ लेते हैं। विवाह जैसे पवित्र रिश्ते की अहमियत नहीं समझते। जहां एक दम्पति एक दूसरे को समझते है और जीवन साथ बिताते हुये बहुत कुछ एक दूसरे की पसंद नापसंद जान जाते है और अपनाना शुरू कर देते है। लिव इन हमारी संस्कृति के खिलाफ है। युवा पीढ़ी जिम्मेदारियों की बंदिश से बचने के लिए ये करती है। इस रिलेशन शिप से यदि कोई बच्चा हो जाए तो बहुत समस्याएं उत्पन्न होती है। क्यों कि कोर्ट कचहरी से ही सुलझा सकते। हम बड़े कोशिश कर सकते है अपने बच्चों को अपने संस्कार समझा सके। उन्हें यह ज्ञान देना जरूरी है इसके दुष्प्रभाव । जिम्मेदारियों से भगा नहीं जा सकता उनको लेना ही पड़ता है।

वैशालीनगर (सुंदरनगर) भिलाई निवासी वंदना निझावन कहती है - "लिव-इन रिलेशनशिप की ओर बढ़ते युवाओं को रोकने के लिए केवल डाँटना या दबाव बनाना समाधान नहीं है। परिवार को बच्चों के साथ खुलकर और दोस्ताना संवाद करना चाहिए, उन्हें प्रेम, विवाह, जिम्मेदारी और रिश्तों की गरिमा समझानी चाहिए। युवाओं को भी समझना होगा कि आकर्षण और प्रेम के साथ भविष्य, परिवार भावनात्मक स्थिरता और जिम्मेदारियों पर विचार करना जरूरी है। समाज को युवाओं को ताने देने के बजाय सही मार्गदर्शन और सकारात्मक वातावरण देना चाहिए। माता-पिता अच्छे संस्कार और अपने व्यवहार से उदाहरण प्रस्तुत करें। स्कूल-कॉलेज में भी रिश्तों और जिम्मेदारियों की समझ विकसित की जाए। परिवार, युवा और समाज मिलकर विश्वास, संवाद और संस्कार मजबूत करें, तभी सही दिशा मिलेगी।

राधिका नगर निवासी रीता वैष्णव कहती हैं - आज की जिस चर्चा में हम शामिल हुए है वो बेहद जटिल और गंभीर है ।हम भारतीय हमारे भारत देश सनातनी धर्म के संस्कारों से बँधे है।लिव इन रिलेशनशिप ये हमारे देश की संस्कृति (संस्कार) नहीं हैं। विदेशों की संस्कृति से आकर्षित होकर भारत देश की युवा पीढ़ी भटक रही है । आज के युवा पीढ़ी अपने आप को मॉर्डन बना रहे है लिव इन रिलेशनशिप का मतलब क्या है ? सिर्फ.और सिर्फ-देह आकर्षण उससे ज़्यादा कुछ नहीं। जब तक मन किया रहे फिर अलग हो गये फिर ये रिश्ता खत्म हो जाता है फिर लड़ाई झगड़े हत्या, आत्म हत्या तक का नौबत आ जाती है। विवाह जैसे पवित्र बंधन को कलंकित कर दिया है, हिंदू धर्म में विवाह का बंधन ऐसा होता है मन ,कर्म , विश्वास पर आधारित होता है उसके गुण और अवगुण दोनों को स्वीकार करते है

विवाह के वेदी के सामने वचन लिया जाता है जीवन भर साथ निभाने का । अंतर्जातीय विवाह ग़लत है ये भी नहीं कहती वो इसलिए क्योंकि वो विवाह के बाद साथ रहते हैं लेकिन विवाह से पहले एक-दूसरे के साथ पति पत्नी की तरह संबंध रखना ये बिल्कुल ग़लत है।

इन रिलेशनशिप को मान्यता दी जाती हैं जो कि बेहद शमर्नाक है। इसका नतीजा भी देख ही लिया आप लोगों ने । इस रिश्ते को मान्यता नहीं दी जाती तो थोड़ा डर बना रहता इतनी भी आजादी नहीं देनी चाहिए कि इन इंसानों के भीतर एक दूसरे के लिए इज़्ज़त सम्मान ही नहीं बचा हो । कड़े क़ानून बने घर परिवार के बड़े बच्चों को अपनी निगरानी में रखें उसको सही दिशा दिखाए ताकि वो ग़लत और सही को समझ सकें। लिव इन रिलेशनशिप मेरी नजरों में बेहद शमर्नाक है। युवाओं के मन को भटकने ना दें।आज के युवा आने वाले कल का भविष्य हैं।

धमतरी निवासी संतोष लखोटिया कहती है -"लिव इन रिलेशनशिप पश्चिमी सभ्यता की देखादेखी और डिजिटल दुनिया की चकाचौंध से युवा सराबोर हो रहे हैं। रिश्तों को गहराई से समझना मजाक लग रहा है। संपूर्ण संस्कारों का हनन हो रहा है। सभ्यता संस्कार को युवापीढ़ी बोझ समझ रहे हैं। जब रिलेशनशिप इंगलिश का शब्द बोलने में हल्का लग रहा है पर इसका कोई नाम नही है और इस रिश्ते से जन्मे बच्चों का जीवन भी अंधकारमय है। इसे समाज के नजरिये से देखो तो बिल्कुल गलत है।पवित्र विवाह के बंधन की जवाबदारी से भाग रहे हैं क्या इसे ठीक करने का कोई मार्ग है।

हाँ है - हमें अपने बच्चों को समझाना होगा ये सब गलत है ऐसे रिश्ते ज्यादा वक्त नहीं रहते । समयानुसार विवाह कर इस प्यार भरे रिश्ते को अपना कर देखो - सच में प्रसन्तता होगी और परिवार एवं समाज में सम्मान एवं एक अलग ही पृष्टभूमि होगी जो आपको आपकी पहचान बतायेगी कि यही है जिंदगी।

स्मृति नगर निवासी कमल चक्रवर्ती का कहना है कि-"आज की युवा पीढ़ी लिव इन रिलेशनशिप में रहने के लिए आकर्षित हो रही है। क्योंकि युवा पीढ़ी को शार्टकट पसंद है और उनको अधिकार तो पूरे चाहिए परन्तु कर्तव्य और जिम्मेदारी से कोसों दूर रहना चाहते है। लिव इन में परिवार की बच्चों की जिम्मेदारी से मुक्ति मिल जाती है। आज की पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति की ओर अग्रसर होती जा रही है उनकी नजरों में संस्कार आधुनिकता की कसौटी पर खरे नहीं उतरते।

मेरे विचार में लिव इन में रहना उचित नही है। फिर भी यदि रहना ही है-तो एग्रीमेंट बनवाकर ही रहें ताकि भविष्य में यदि घरेलू हिंसा या और किसी तरह की परेशानी आती है तो एग्रीमेंट काम आयेगा। आजकल तो कई राज्य लिव इन को लीगल मान रहे हैं और सुप्रीम कोर्ट ने भी कुछ नियम पक्ष में बनाए है। समय समय पर परिवर्तन होते रहते हैं और होना भी चाहिए। रिश्तों में सुरक्षा सम्मान और जिम्मेदारी तीनों हो तो इसके लिए एग्रीमेंट बनवाकर ही रहें,

समाज को भी अपनी सोच को बदलना होगा,परिवार को भी अपनी जिम्मेदारी निभानी पड़ेगी और बच्चों का साथ देना होगा। अब आती है सरकार की जिम्मेदारी। सरकार को भी इनके लिए संविधान में संशोधन करके कुछ नियम बनाकर इनको भी मुख्य धारा से जोडना होगा। वैसे मैं लिव इन रिलेशनशिप के पक्ष में नही हूं फिर भी कहना चाहूंगी कि जो भी रहना चाहते है उनको उनके तरीके से जीने का अधिकार है।

मैत्री कुंज रिसाली निवासी प्रियंका सिंह कहती है कि -लिव -इन रिलेशनशिप की परंपरा हमारे छत्तीसगढ़ के आदिवासी समाज में विशेषकर बस्तर में घोटुल प्रथा के नाम से सदियों से है।शायद उन्होंने ये नियम बेहतर और स्वस्थ वैवाहिक जीवन को ध्यान में रखकर बनायी होगी और सफल रही होगी तभी तो आज तक चलन में है । लेकिन मेरा मानना है कि ये नियम इसलिये ज़्यादा सफल हुई होगी क्योंकि उनके संस्कृति से जुड़ी थी और समाज में ससम्मान सवर्मान्य है

हमारे शास्त्रो में कहा गया है की अति सर्वत्र वर्जयते और ये लाइन आज के परिपेक्ष्य में लिव -इन रिलेशनशिप पर सटीक बैठती है क्योंकि आज की पीढ़ी ने इसे पाश्चात्य संस्कृति से अपनाया है । आज की पीढ़ी ने लिव -इन रिलेशनशिप को मजाक और मस्ती के अवसर की तरह उपयोग करना शुरू कर दिया है। जिसमे ना कोई नियम है , ना कोई डर।बॉलीवुड, जो आज की पीढ़ी की मार्गदर्शक बन बैठी है उसने तो उसमे घी नहीं पेट्रोल ही डाल दिया है और उस पर सुप्रीम कोर्ट ने भी उसे न्यायोचित सिद्ध कर दिया है । तो बस सारा डर खत्म। सैया भए कोतवाल अब डर कहे का लेकिन हमारे समाज की जो संस्कृति है उसमे विवाह को लेकर कुछ नियम और नीतियाँ तय की गई है जिसको लेकर अभी भी हमारा समाज सख्त है। ठीक है नियम को लेकर अनुशासन अनिवार्य है ऐसे में समाज भला कैसे स्वीकार करेगा इसको जिसमे बस बच्चों की बर्बादी ही दिख रही हो।

समाधान की बात करे तो , लीव-इन रिलेशनशिप का मूल तो निःसंदेह ठोस ,व्यवहारिक और उपयोगी है लेकिन उसके क्रियान्वयन में बदलाव की जरूरत है और उसकी बड़ी जिम्मेदारी आज की पीढ़ी और उनके माता पिता को मिलकर तय करनी होगी। इसलिये बच्चों को पहले तो ये विश्वास दिलाना होगा की पार्टनर के साथ की कम्पेटिबिलिटी की पहली शर्त उनके माता पिता उनके साथ मिलकर पूरी करेंगे ।

जैसे मान ले कि बच्चे अगर पहले साथ रहकर एक दूसरे को समझना चाहते है तो उनके माता पिता को भी बड़ा दिल रखकर मौका दे।इससे एक कंट्रोल और अनुशासन की लगाम रहेगी । लिव -इन रिलेशनशिप को जिम्मेदारी का जामा पहनाना पड़ेगा जिसके लिए कांट्रैक्ट या एग्रीमेंट को जरूरी कर देना चाहिए । बच्चों को भी इसका पक्ष और विपक्ष समझना होगा ।

वैसे तो मैं लीव-इन रिलेशनशिप की अवधारणा की समर्थक नहीं हूँ फिर भी अगर समय की माँग को देखते हुए स्वस्थ सामाजिक स्वीकृति के साथ इसे अपनाया जाय तो शायद बच्चों को शादी को लेकर जो डर और संशय है उसका समाधान खोजने में मदद होगी, बच्चे आपराधिक उलझन में नहीं फसेंगे और समाज की विकृति काफी हद तक कम होगी ।

खास खबर

जिला पंचायत सीईओ सुश्री प्रेमलता पद्माकर ने जनदर्शन में सुनी आमजन की समस्याएं

नई दृष्टिबिंदु / बेमेतरा

जिले के नागरिकों की समस्याओं के त्वरित समाधान एवं जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से आज सोमवार को कलेक्टर सुश्री प्रतिष्ठा ममगाईं के निर्देशन में जिला पंचायत सीईओ प्रेमलता पद्माकर द्वारा कलेक्टरेट स्थित दृष्टि सभा कक्ष में जनदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जनदर्शन में जिले के विभिन्न अंचलों से आए नागरिकों ने अपनी मांगों, समस्याओं एवं शिकायतों से संबंधित आवेदन प्रस्तुत किए। जनदर्शन के दौरान जिला पंचायत सीईओ ने प्रत्येक आवेदक की समस्या को गंभीरता एवं संवेदनशीलता के साथ सुना। उन्होंने संबंधित विभागीय अधिकारियों को मौके पर बुलाकर एवं दूरभाष के माध्यम से चर्चा कर कई प्रकरणों का तत्काल निराकरण कराया। प्रशासन की तत्परता के चलते कई नागरिकों की समस्याओं का समाधान मौके पर ही कर दिया गया, जिससे आवेदकों में संतोष एवं विश्वास का माहौल देखने को मिला।

आज आयोजित जनदर्शन में विभिन्न विभागों से संबंधित कुल 29 आवेदन प्राप्त हुए। तात्कालिक महत्व के मामलों में शीघ्र कारर्वाई करते हुए समाधान किया गया, जबकि गंभीर एवं जांच योग्य प्रकरणों को टीएल पंजी में दर्ज कर संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्धारित समय-सीमा के भीतर निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए।

जनदर्शन में निराश्रित पेंशन, वृद्धा पेंशन, दिव्यांग पेंशन, प्रधानमंत्री आवास योजना, बैटरी चालित ट्रायसायकल प्रदाय, कटा हुआ रकबा जोड़ने, खाद गड्ढा हटाने, आम रास्ता खुलवाने सहित अन्य जनहित से जुड़े विषयों पर आवेदन प्राप्त हुए। सीईओ ने सभी आवेदनों को गंभीरता से लेते हुए संबंधित विभागों को नियमानुसार शीघ्र एवं प्रभावी कारर्वाई करने के निर्देश दिए। जिला पंचायत सीईओ ने अधिकारियों को यह भी निर्देशित किया कि जनदर्शन में प्राप्त आवेदनों का संवेदनशीलता, पारदशिर्ता एवं समयबद्धता के साथ निराकरण किया जाए, ताकि आम नागरिकों को बार-बार कार्यालयों के चक्कर न लगाने पड़ें। उन्होंने नागरिकों को भरोसा दिलाया कि जिला प्रशासन उनकी समस्याओं के समाधान के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रहा है। इस अवसर पर विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

विश्व आदिवासी दिवस पर जिले के विभिन्न स्थानों पर हुए विधिक जागरूकता शिविर

नई दृष्टिबिंदु / बेमेतरा

राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, नई दिल्ली एवं छत्तीसगढ़ राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, बिलासपुर द्वारा संचालित स्टेट प्लान ऑफ एक्शन कैलेंडर 2026-27 के अनुसार विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर जिले के विभिन्न स्थानों पर विधिक जागरूकता शिविरों का आयोजन किया गया। यह आयोजन प्रधान जिला न्यायाधीश एवं अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्रीमती सरोज नन्द दास के मार्गदर्शन में तथा सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, बेमेतरा श्रीमती स्वर्णलता ओम यादव की उपस्थिति में किया गया।

प्री-मैट्रिक अनुसूचित जनजाति बालिका छात्रावास, बेमेतरा में आयोजित शिविर में सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा उपस्थित छात्र-छात्राओं को भारतीय संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकार एवं कर्तव्यों, अनुसूचित जनजातियों के संवैधानिक अधिकार, शिक्षा एवं समानता का अधिकार, बाल अधिकार, बाल विवाह प्रतिषेध, बाल संरक्षण संबंधी कानून तथा निःशुल्क विधिक सहायता सहित विभिन्न महत्वपूर्ण कानूनी प्रावधानों की जानकारी दी गई।

शिविर में विद्यार्थियों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करते हुए किसी भी प्रकार के शोषण, भेदभाव, बाल विवाह, बाल श्रम अथवा अन्य कानूनी समस्या की स्थिति में उचित विधिक सहायता प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया गया। इस दौरान नालसा की विभिन्न योजनाओं, नालसा टोल फ्री हेल्पलाइन नंबर 15100, बाल विवाह निषेध अधिनियम 2006, पॉक्सो एक्ट 2012, हिट एंड रन स्कीम 2022, शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 तथा चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर 1098 के संबंध में विस्तार से जानकारी प्रदान की गई। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अधिकार मित्रों एवं लीगल एड डिफेंस कौंसिल द्वारा जिले के विभिन्न छात्रावासों एवं शैक्षणिक संस्थानों में भी विधिक जागरूकता शिविर आयोजित किए गए। इनमें कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय बेमेतरा, शासकीय प्री-मैट्रिक अनुसूचित जाति बालक छात्रावास कोबिया बेमेतरा, शासकीय प्री-मैट्रिक अनुसूचित जाति बालिका छात्रावास बेमेतरा, शासकीय प्री-मैट्रिक अनुसूचित जाति बालक छात्रावास साजा, पोस्ट-मैट्रिक अनुसूचित जनजाति बालक छात्रावास बेमेतरा तथा शासकीय प्री-मैट्रिक अनुसूचित जाति बालिका छात्रावास बेरला में छात्र-छात्राओं को कानून एवं उनके अधिकारों से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी दी गई।

इन शिविरों में छात्र-छात्राओं के साथ छात्रावासों के अधीक्षक/अधीक्षिका, शिक्षकगण, लीगल एड डिफेंस कौंसिल के अधिवक्तागण एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, बेमेतरा के अधिकार मित्र उपस्थित रहे। इसके साथ ही जिला जेल बेमेतरा में भी विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में निरुद्ध बंदियों को आदिवासी समुदाय के अधिकारों, उनके संवैधानिक संरक्षण एवं विधिक अधिकारों के संबंध में जानकारी प्रदान की गई। बंदियों को निःशुल्क विधिक सहायता, न्याय तक पहुंच तथा उनके कानूनी अधिकारों के प्रति जागरूक करते हुए उपलब्ध विधिक सहायता सेवाओं का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया गया।

बंदियों को दिया दो दिवसीय मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केंद्र, बेमेतरा द्वारा जिला जेल बेमेतरा में बंदियों के कौशल विकास, स्वरोजगार एवं आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 6 एवं 7 अगस्त 2026 को दो दिवसीय मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जिला जेल बेमेतरा के 28 बंदियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कृषि विज्ञान केंद्र, बेमेतरा के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख श्री तोषण ठाकुर के मार्गदर्शन में किया गया। प्रशिक्षण का संचालन कृषि विज्ञान केंद्र की वैज्ञानिक डॉ. राजनी डी. अगाशे एवं श्री डोमन सिंह टेकाम द्वारा किया गया। दो दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को मशरूम उत्पादन की आधुनिक एवं व्यावहारिक तकनीकों की विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। प्रशिक्षण में मशरूम उत्पादन के लिए आवश्यक सामग्री, सब्सट्रेट तैयार करने की विधि, स्पॉन की जानकारी, उत्पादन की विभिन्न अवस्थाएं, स्वच्छता एवं आवश्यक सावधानियां, उचित तापमान एवं नमी का प्रबंधन, फसल की देखभाल एवं तुड़ाई सहित मशरूम के विपणन एवं मूल्य संवर्धन से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को व्यावहारिक प्रदर्शन के माध्यम से मशरूम उत्पादन की विभिन्न प्रक्रियाओं को प्रत्यक्ष रूप से समझाया गया। इससे बंदियों को मशरूम उत्पादन की तकनीक को केवल सैद्धांतिक रूप से समझने के साथ-साथ इसे व्यवहार में अपनाने की जानकारी भी प्राप्त हुई।

उच्च शिक्षण संस्थानों के ईएलसी नोडल अधिकारियों को दिया एक दिवसीय प्रशिक्षण

नई दृष्टिबिंदु / बेमेतरा

स्वीप कार्ययोजना के तहत मतदाता जागरूकता को बढ़ावा देने तथा युवाओं को लोकतांत्रिक प्रक्रिया एवं मतदान से जोड़ने के उद्देश्य से जिले के उच्च शैक्षणिक संस्थानों में गठित मतदाता साक्षरता क्लब (ईएलसी) के नोडल अधिकारियों का एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम जिला कार्यालय बेमेतरा के सभाकक्ष में आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में जिला स्तरीय मास्टर ट्रेनरों द्वारा निर्वाचन प्रक्रिया से संबंधित विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की गई।

प्रशिक्षण के दौरान उप जिला निर्वाचन अधिकारी प्रीतम सिंह चौहान ने स्वीप कायर्योजना के अंतर्गत जिले के सभी उच्च शैक्षणिक संस्थानों में मतदाता साक्षरता क्लब को सक्रिय रूप से संचालित करने के निर्देश दिए। उन्होंने अगस्त माह के दौरान महाविद्यालयों एवं अन्य शैक्षणिक संस्थानों में विभिन्न मतदाता जागरूकता गतिविधियों का आयोजन कर उसका पालन प्रतिवेदन 05 सितम्बर 2026 तक जिला निर्वाचन कार्यालय, बेमेतरा को भेजने कहा। साथ ही महाविद्यालयों में नियुक्त कैम्पस एम्बेसडर एवं उनके द्वारा आयोजित मतदाता जागरूकता गतिविधियों की जानकारी निर्धारित गूगल लिंक में दर्ज करने तथा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर भी गतिविधियों को साझा करने के निर्देश दिए।

जिला स्तरीय मास्टर ट्रेनर सुनील कुमार झा ने प्रशिक्षणाथिर्यों को भारत निर्वाचन आयोग द्वारा विकसित एकीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म ईसीआई नेट मोबाइल एप की उपयोगिता एवं विभिन्न निर्वाचन सेवाओं के संबंध में जानकारी दी। उन्होंने मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने के लिए आयोग द्वारा निर्धारित चार अहर्ता तिथियों 01 जनवरी, 01 अप्रैल, 01 जुलाई एवं 01 अक्टूबर की जानकारी देते हुए मतदाता सूची में नाम जुड़वाने, नाम विलोपित कराने, विवरण में संशोधन एवं स्थानांतरण की प्रक्रिया समझाई। इस दौरान फॉर्म-6, फॉर्म-7 एवं फॉर्म-8 के माध्यम से ऑनलाइन एवं ऑफलाइन आवेदन की प्रक्रिया के साथ-साथ मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (रक्क्ष), विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण (ररफ) तथा मतदाता सूची तैयार करने एवं अद्यतन करने की बुनियादी जानकारी भी प्रदान की गई।

प्रशिक्षण में भारत निर्वाचन आयोग की भूमिका, ईवीएम एवं वीवीपैट के माध्यम से मतदान की संपूर्ण प्रक्रिया, नैतिक एवं सूचित मतदान, मतदाता साक्षरता, भारतीय संविधान तथा देश की चुनावी प्रक्रिया से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण पहलुओं पर भी विस्तार से जानकारी दी गई। प्रशिक्षणाथिर्यों को युवाओं एवं नए मतदाताओं के बीच निर्वाचन संबंधी जागरूकता बढ़ाने तथा उन्हें मतदान के अधिकार के प्रति सजग करने के लिए प्रभावी गतिविधियां संचालित करने हेतु प्रेरित किया गया।

सहायक प्रोग्रामर बॉबी राजपूत ने नए मतदाताओं द्वारा ऑनलाइन फॉर्म-6 भरने की प्रक्रिया के संबंध में व्यावहारिक जानकारी दी।

सिंगल यूज प्लास्टिक और लाइसेंस नहीं मिलने पर 2 प्रतिष्ठानों पर 8600 की चालानी कार्रवाई

निगम आयुक्त सुरुचि सिंह के निर्देश पर जोन 01 में की गई सघन जांच

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

नगर पालिक निगम भिलाई द्वारा सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध और स्वच्छता नियमों के कड़ाई से पालन के लिए लगातार अभियान चलाया जा रहा है। निगम आयुक्त सुरुचि सिंह के निर्देशानुसार 08 अगस्त 2026 को जोन क्रमांक 01 के वार्ड क्रमांक 07 राधिका नगर क्षेत्र, जुनवानी रोड के पास प्रतिष्ठानों की जांच की गई। जांच के दौरान नियमों का उल्लंघन पाए जाने पर दो प्रतिष्ठानों पर कुल 8,600 रुपये की चालानी कार्रवाई की गई।

इन प्रतिष्ठानों पर हुई कार्रवाई

1. कैफे बिरयानी गब्बर ढाबा – अनुज्ञप्ति लाइसेंस नहीं पाए जाने पर 4,000 रुपये का शुल्क
2. कैफे बिरयानी गब्बर ढाबा – गीला–सूखा कचरा अलग–अलग नहीं रखे जाने पर 2,000 रुपये का शुल्क
3. बिरयानी बॉक्स – सिंगल यूज प्लास्टिक पाए जाने पर 600 रुपये का शुल्क
4. अमन ढाबा – सिंगल यूज प्लास्टिक पाए जाने पर 2,000 रुपये का शुल्क

इस प्रकार जोन 01 में कुल 8,600 रुपये की चालानी कार्रवाई की गई।

नियमों के उल्लंघन पर होगी कड़ी कार्रवाई

निगम आयुक्त सुरुचि सिंह ने कहा कि शहर को स्वच्छ और प्लास्टिक मुक्त बनाने के लिए यह अभियान आगे भी जारी रहेगा। सभी व्यापारिक प्रतिष्ठानों को निर्देश दिए गए हैं कि वे अपना अनुज्ञप्ति लाइसेंस नवीनीकृत रखें, प्रतिष्ठान में गीला और सूखा कचरा अलग–अलग रखें और सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग बिल्कुल न करें। निगम द्वारा सभी जोनों में लगातार जांच की जा रही है। नियमों का उल्लंघन करने वाले प्रतिष्ठानों पर जुर्माने के साथ–साथ आगे वैधानिक कार्रवाई भी की जाएगी।

स्वरांजलि ने सुरों से याद किया किशोर कुमार को

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

महान गायक एवं अभिनेता किशोर कुमार के जन्मदिवस के अवसर पर स्वरांजलि संगीत समूह द्वारा 9 अगस्त को एक संगीतमय शाम का आयोजन किया गया। किशोर कुमार के अमर गीतों की प्रस्तुतियों ने श्रोताओं को देर रात तक मंत्रमुग्ध रखा।

कार्यक्रम नगर निगम दुर्ग की महापौर अल्का वाघमार की मुख्य आतिथ्य में हुआ। विशिष्ट अतिथि के रूप में कैलाश जैन बरमेचा, अभिषेक गोस्वामी, प्रीति साहू, आकांक्षा मिश्रा, रत्ना नामदेव, प्रीति वेहरा, विनोद चंद्राकर, सरमद इमाम, सावित्री डमहे, आशीष चंद्राकर, अनूप अग्रवाल एवं मनीष पारख सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

किशोर के गीतों से गूंजा मंच : कार्यक्रम में सूर्यकला शर्मा, गीता सिंग, पीयूषा मनहरे, तृप्ति, ज्योति, अनिल शुक्ला, जाहिद, सूरज अग्रवाल, अनुभव जैन एवं अमित अग्रवाल सहित अन्य कलाकारों ने किशोर कुमार के सदाबहार गीत प्रस्तुत किए। एक से बढ़कर एक गीतों ने कभी श्रोताओं को भावुक किया तो कभी झूमने पर मजबूर कर दिया। कार्यक्रम के दौरान किशोर कुमार के जीवन, संगीत एवं फिल्मों पर आधारित प्रश्नोत्तरी भी आयोजित की गई। श्रोताओं ने उत्साह से भाग लिया और विजेताओं को आकर्षक उपहार दिए गए।

महापौर ने की सराहना : महापौर अल्का वाघमार ने स्वरांजलि समूह को सफल आयोजन के लिए शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि किशोर कुमार जैसे महान कलाकार की स्मृति में इस प्रकार के आयोजन संगीत प्रेमियों को जोड़ते हैं। महापौर ने कलाकारों की प्रतिभा की सराहना करते हुए कहा कि काश हमारी आवाज भी आप जैसी होती।

उन्होंने स्वरांजलि को आगामी 15 अगस्त के देशभक्ति रंगारंग कार्यक्रम के लिए भी आमंत्रित किया। स्वरांजलि के अध्यक्ष संजय दुबे ने अतिथियों को पौधे भेंट कर पर्यावरण प्रेम का संदेश दिया। इसके बाद उन्होंने देशभक्ति गीत प्रस्तुत कर माहौल को देशभक्ति के रंग में रंग दिया। कार्यक्रम का सफल संचालन अविनाश तिवारी ने किया। स्वरांजलि की सचिव सूर्यकला शर्मा ने अतिथियों, कलाकारों एवं श्रोताओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

राजेश सराफ, तुलसी सोनी, ईश्वर राजपूत, जीवन वर्मा, शिवकांत तिवारी, संजय डहरवाल, डॉ. आशीष जैन, अनिल बल्लेवार, दीपक साहू सहित शहर के अनेक प्रतिष्ठित नागरिक, महिलाएं एवं बच्चे बड़ी संख्या में उपस्थित थे। संगीत, मनोरंजन, सम्मान और देशभक्ति के संगम वाला यह आयोजन किशोर कुमार की अमर संगीत विरासत को समर्पित एक यादगार शाम बन गया।

डॉ. शरद चंद्र भैया की नई पुस्तक 'जर्नी इनटू ब्लैक होल्स' विमोचित

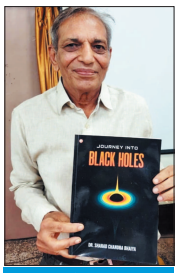

युवा पाठकों के लिए ब्लैक होल के रहस्यों को सरल भाषा में समझाने का प्रयास

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

ब्रह्मांड के सबसे रहस्यमय विषय ब्लैक होल पर आधारित विज्ञान–केंद्रित पुस्तक 'जर्नी इनटू ब्लैक होल्स' का विमोचन भिलाई के बीएसपी सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सेक्टर 10 में किया गया। पुस्तक के लेखक पूर्व भौतिकी व्याख्याता डॉ. शरद चंद्र भैया हैं।

कार्यक्रम में शिक्षकों और छात्रों की उपस्थिति में पुस्तक का लोकार्पण हुआ। इसका उद्देश्य छात्रों में ब्लैक होल, अंतरिक्ष विज्ञान, खगोल विज्ञान और वैज्ञानिक अनुसंधान के प्रति जिज्ञासा विकसित करना है।

पुस्तक की विशेषताएं

डॉ. भैया ने बताया कि 'जर्नी इनटू ब्लैक होल्स' को विशेष रूप से युवा पाठकों को ध्यान में रखकर लिखा गया है। ब्लैक होल जैसे जटिल विषय को सरल और छात्र–अनुकूल प्रारूप में प्रस्तुत कर पुस्तक सवाल पूछने, स्वतंत्र सोच और ब्रह्मांड की खोज के प्रति उत्साह बढ़ाने का प्रयास करती है। विमोचन के दौरान डॉ. भैया ने छात्रों से सीधा संवाद किया। उन्होंने ब्लैक होल से जुड़े वैज्ञानिक पहलुओं को सरल भाषा में समझाया और छात्रों के सवालों के जवाब दिए।

लेखक का उद्देश्य

डॉ. शरद चंद्र भैया का मानना है कि ब्रह्मांड के प्रति जिज्ञासा ही विज्ञान की गहरी यात्रा की शुरुआत है। इस पुस्तक के जरिए वे वैज्ञानिक ज्ञान और युवा जिज्ञासा के बीच की दूरी को कम करना चाहते हैं, ताकि छात्र कक्षा से आगे जाकर अनुसंधान और खोज की दुनिया से जुड़ सकें।

पुस्तक के बारे में
शीर्षक: जर्नी इनटू ब्लैक होल्स
लेखक: डॉ. शरद चंद्र भैया
विषय: ब्लैक होल, अंतरिक्ष विज्ञान, खगोल विज्ञान और वैज्ञानिक अनुसंधान

लेखक परिचय

डॉ. शरद चंद्र भैया बीएसपी सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सेक्टर 10 से जुड़े पूर्व भौतिकी व्याख्याता हैं। विज्ञान को सरल तरीके से छात्रों तक पहुंचाना उनका प्रमुख उद्देश्य रहा है। 'जर्नी इनटू ब्लैक होल्स' इसी दिशा में उनका नया प्रयास है।

अखिल भारतीय उत्कृष्ट बहुउद्देशीय संस्था की त्रैमासिक बैठक में नई कार्यकारिणी घोषित

2025–26 के कार्यों का ब्योरा प्रस्तुत, तीन साल के लिए गठित हुई नई टीम

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

अखिल भारतीय उत्कृष्ट बहुउद्देशीय संस्था की द्वितीय त्रैमासिक बैठक रविवार को भिलाई होटल स्थित इंडियन कॉफी हाउस में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता संस्था अध्यक्ष शानू मोहनन ने की। बैठक में अध्यक्ष शानू मोहनन ने वर्ष 2025–2026 में संस्था द्वारा किए गए कार्यों का सम्पूर्ण विवरण प्रस्तुत किया। इस दौरान नए और पुराने सदस्यों का परिचय भी कराया गया।

तीन वर्ष के लिए गठित हुई नई कार्यकारिणी

बैठक में संस्था की नई कार्यकारिणी की घोषणा की गई, जिसका कार्यकाल तीन वर्ष का होगा।

नई कार्यकारिणी में अध्यक्ष : शानू मोहनन
उपाध्यक्ष : डॉ. हंसा शुक्ला
सचिव : अजय कुमार गुप्ता
सह सचिव : अभिलाषा मिश्रा
– कोषाध्यक्ष : सागरिका पाढ़ी
– कायर्कारिणी सदस्य : सुश्री उमा नायर, विजय लक्ष्मी

ये सदस्य उपस्थित रहे

कार्यक्रम में सागरिका पाढ़ी, तब्बासुम, सोनम गुप्ता, शेफाली भट्टाचार्य, सलाहकार समिति के सदस्य प्रदीप भट्टाचार्य, प्रोफेसर डी. एन. शर्मा, डॉ. हंसा शुक्ला, राजीव अस्थाना, संगीता अस्थाना, शानू मोहनन, उमा नायर, विजय लक्ष्मी, अभिलाषा मिश्रा सहित बड़ी संख्या में सदस्य उपस्थित थे।

सभा का संचालन सागरिका पाढ़ी ने किया। अंत में अध्यक्ष शानू मोहनन ने सभी सदस्यों के सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया। धन्यवाद ज्ञापन सह सचिव अभिलाषा मिश्रा ने प्रस्तुत किया।

BSP के GM हिमांशु मलिक को हाईकोर्ट से जमानत, आज होंगे रिहा

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई-बिलासपुर

भिलाई इस्पात संयंत्र से लोहा चोरी के मामले में 9 जुलाई को गिरफ्तार किए गए इरढ के महाप्रबंधक हिमांशु मलिक को आज राहत मिल गई है। हाई कोर्ट बिलासपुर के चीफ जस्टिस रमेश सिन्हा की अदालत ने उन्हें जमानत दे दी है। जमानत मिलने के बाद हिमांशु मलिक मंगलवार को दुर्ग जेल से रिहा हो जाएंगे।

गौरतलब है कि बीएसपी से लोहा चोरी के मामले में पुलिस ने 9 जुलाई को हिमांशु मलिक को गिरफ्तार किया था। तब से वे दुर्ग जेल में न्यायिक हिरासत में थे। मामले में आगे की कानूनी प्रक्रिया जारी रहेगी।

बिलासपुर में दंपत्ति ने की खुदकुशी: बच्चों

बिलासपुर। छत्तीसगढ़ की न्यायधानी बिलासपुर से सनसनीखेज मामला सामने आया है। सिरगिट्टी थाना क्षेत्र के नयापारा वार्ड नंबर 12 स्थित किराए के मकान में मंगलवार को दोनों की लाश फांसी के फंदे पर लटकी हुई मिली। इस घटना से इलाके में हड़कंप मच गया है। जानकारी के मुताबिक, मृतकों की पहचान रमेश सिंह बंजारा और माया बंजारा के रूप में हुई है। वह मूल रूप से मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिले के जामकछार के रहने वाले थे। वह दो बच्चों के साथ बिलासपुर में किराए के मकान में रहते थे। पति रमेश इंडस्ट्रियल इलाके के एक कंपनी में काम करता था। घटना की सूचना के बाद पुलिस और एफएसएल की टीम मौके पर पहुंच गई है। दोनों के शव को फांसी के फंदे से उतारकर पंचानाम किया गया। पोस्टमार्टम के लिए शवों को भेज दिया गया है। प्रारंभिक जांच में सामने आया कि मंगलवार सुबह तकरीबन 5 बजे दोनों बच्चों के जोर–जोर से रोने की आवाज आई, जिसे सुनकर मकान मालिक रमेश कुमार साहू वहां पहुंचे। कमरे के अंदर का दृश्य देखकर उनके होश उड़ गए। पति–पत्नी फांसी के फंदे पर लटके हुए थे।

"यह समाचार पत्र आलोक तिवारी द्वारा 80/बी, मैत्री विहार, राधिका नगर, सुपेला, भिलाई, जिला दुर्ग, (छत्तीसगढ़)-490023 से आलोक तिवारी की ओर से प्रकाशित की जाती है, जिसका संपादन आलोक तिवारी द्वारा किया जाता है तथा इसका मुद्रण समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स द्वारा प्लॉट नं. 339/6, गली नं. 02, पाटन, थाना उतई, दुर्ग, (छ.ग.)-491111 पर किया जाता है। (समाचार चयन के लिए PRP Act, 2023 के तहत संपादक जिम्मेदार है)। समस्त विवादों का निपटारा न्यायालयीन क्षेत्र दुर्ग होगा।" संपादक आलोक तिवारी, मो. 74154-69100